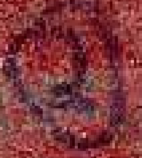
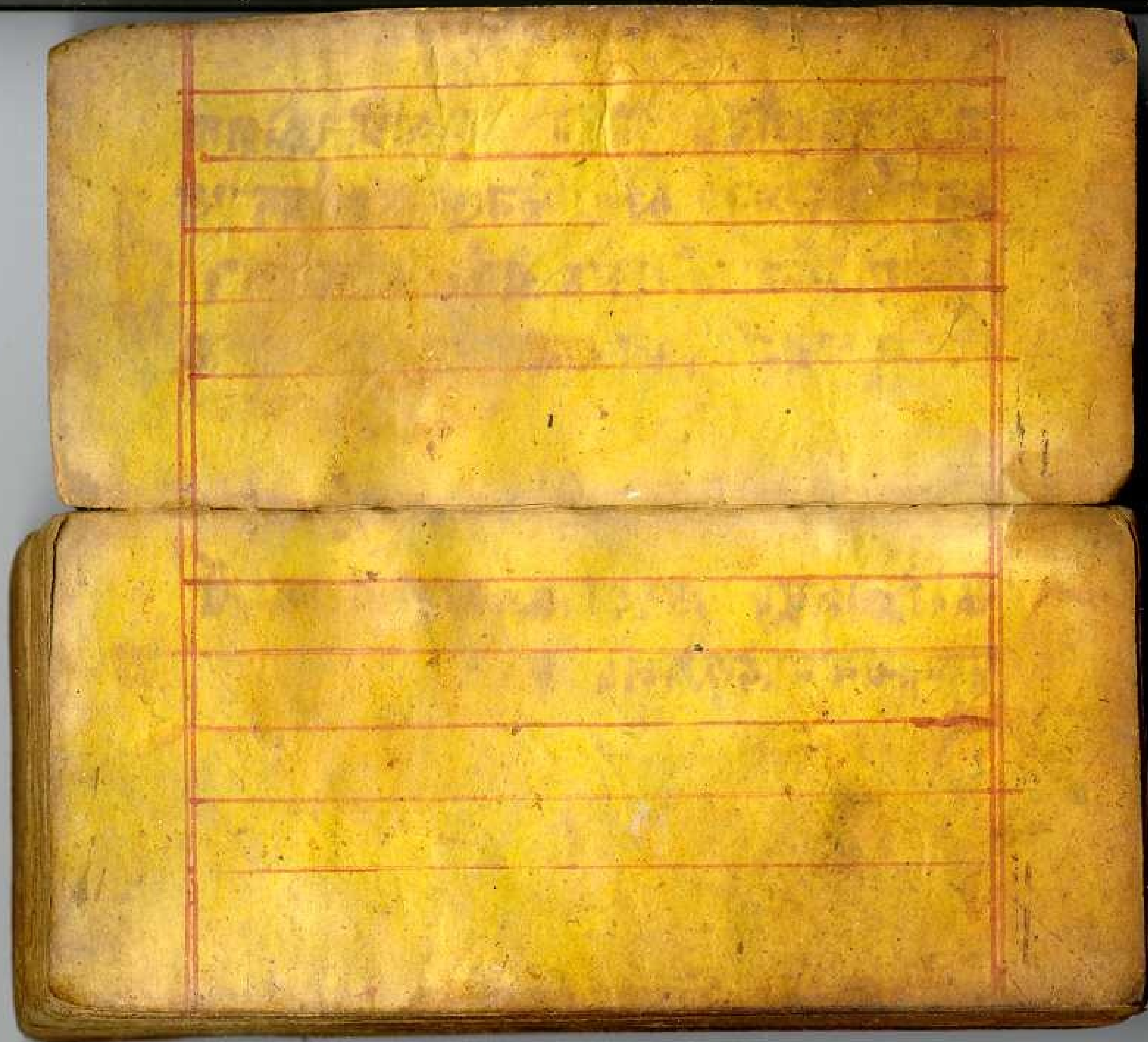

2061 I





ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॥ नमः स्वस्ति गन्धपुष्पसाधनं ॥ आसीन
पीठं ॥ न्यासं संकारयं ॥ पूजनं ॥ ॐ गन्धयामि ॥ अर्घ्य देवं ॥
ॐ देवस्य त्वा ॥ पूजनं ॥ पूर्व दक्षि ॥ ॐ उमायामि देवताय २ ॥ ॐ
दक्षिणायां ॥ ॐ ॥ आसनं ॥ ॐ शिवाय २ ॥ ॐ शिवानामामि
॥ दक्षिण पश्चिम पूजन ॥ ॐ वह्नि देवताय २ ॥ ॐ गायत्री ॥ नैऋत्य पू
ज्य ॥ ॐ नैऋत्य २ ॥ ॐ श्री पुष्पं ॥ पश्चिम कोण ॥ ॐ सोम देवताय २ ॥
ॐ पयः पृथिव्यां ॥ वायव्यां पूजय ॥ ॐ जनार्दन देवताय २ ॥

ॐ गन्धद्वारां ॥ उत्तर पूज ॥ ॐ मन्त्रामि ॥ ईशान कोण पूजक ॥ ॐ
ॐ वरुणाय २ ॥ ॐ वरुण स्थालं ॥ मध्ये ब्रह्मार्पं ॥ ॐ ब्रह्मणे २ ॥
ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॥ गन्धमुक्ति ॥ ध्यान १० ॥ पूजा आरादि कथ
नं पूजाव्य आलं ॥ ॐ जनय श्री स्वाहा ॥ ॐ सन्धयामि ॥ वासे धू
नक्षत्र तालीसलान पूजाय पूजायाग ॥ चन्दना दिव्य पूजानं ॥ ॐ
ब्रह्मयज्ञानं ॥ जायस्नान ॥ ॐ निर्मलं काल पूजाय ब्रह्मज्ञान नि
वर्दिवं ॥ ॐ प्रणाम पाय पूजाय त्रिकीर्ति ब्रह्म रूपिणं ॥ अनुगन्ध ॥

ह्रिं ॥ ओं ह्रीं गणपतये स्वाहा ॥ कुमारी शिवस्य ॥ कुमारी पूजितस्य ॥ कुमार
जमानस्य ॥ शिवस्य पूजा नाम ॥ ओं स्वस्ति न इन्द्र [illegible] ॥ ओं [illegible]
[illegible] ॥ ओं [illegible] ॥ ओं ह्रीं [illegible] ॥ ओं [illegible] ॥ ओं [illegible]
[illegible] ॥ ओं धूपं [illegible] ॥ ओं [illegible] ॥ [illegible] ॥ ओं नमः शिवाय [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ स्वस्ति [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ओं [illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ ओं [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ओं [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible] पूजा ॥ ०००
॥ ओं [illegible] ॥ ओं [illegible] ॥ [illegible] ॥ ओं

पुष्टिकाय विष्णुमूर्त्तये २ ॥ ॐ नमः शम्भवाय ॥ श्रीद्विजवस
॥ ॐ सर्वाग्निरूपिणे शिवब्रह्मास्तुमूर्त्तये २ ॥ ॐ त्वंसविसृष्ट ॥
॥ मायकाले ॥ सचारवसः । ऊर्ध्वपान्नरखेन शिवनपीआहोज ॥ ५२
ज्वलनतुरूनयुक्तान शिवशक्तिकालशआलिवनाय ॥ ॐ वायु
वायाहिवीनयघृहाशाहृद्याकानय । अग्निस्वाङ्गुष्ठस्य धामस्तु ॥
ॐ श्रीः शक्तिः ॥ शिवतूर्वप्राणायवीनमनवा ॥ ह्रिवासनपूजार्थ
यः ॥ चन्दनादिपूजार्थं ॥ ॐ नमः शम्भवाय ॥ ॥ ॐ किङ्किणीपूजा ॥

६ ॐ नमो गणेशाय ॥ ॥ नमोऽकूर्मशेषकनक्कूर्ष्यणि ॥ ॐ कूर्मा
दि ॥ पंचामात्मस्या मकक्ता यृ येऽस्मात्मकतुं पीत्स्वर्यायाधी
नमः ॥ ॐ मा हृन्थ्येकानरि ॥ हास्थनन्स्या पूर्ण २ ॥ पूजा तल्लुस
हां सामाधियकर्वं ॥ ॐ सिद्धिनस्तु कियात्र मृत्यादि ॥ पूज्याराउनं
नमस्करोमि ॥ ॥ पूजातल्लु वाक्षणस्वेल्लाय ॥ ब्राह्मणेभ्यः ॥
ॐ भूयादि ॥ सूर्योर्घ्यं ॥ गुरुस्मरणमालाया ॥ कूर्मशिष्यस्तु ॥
र्ष्यो७ ॥ ॥ आत्मस्वं स्नित्वा ॥ मातृर्वीन्त्वास्पीत्रपं७ ॥ ॐ को

मदनशकालस्मामान्यार्घ्याउत्साधमित्वा ॥ लाउ मनासमानं सिद्धि
तिलयं विधाय ॥ पूजापः ॥ पुष्पदूर्वामादाय ॥ ॐ देवस्य त्वा ॥
स्नानरवद्गणहनं ॥ ॐ महाउं ॐ न्द्रो देवेज दस्स्थमातशी सम्यस्यस्तु
तु । हस्तयायाष्मान्ढुं हिमउं कर्याद्विष्यः ॥ स्नानरवउमहृहीत्वा ॥ गणे
शत्वादित्वत्वाडुनं ॥ ॐ गणानां त्वा गणपतिं ॥ गणपतिबलिं ॥ ॐ
नमो वज्रनाग ॥ नागबलिं ॥ ॐ जातवेदसे ॥ दुर्गाबलिं ॥ ॥
भूतबलिमाजायस्त्रोत ॥ ॐ निर्मलिनिर्मिकल्पं निर्गुणमनमनुलंनि

ह्रींकारं लंकाकारं हूंकारं वज्रदंष्ट्रं दुःखदहनयन्त्रीरुद्रस्वरू
पं । ह्रःकारं वज्रनागं ह्रकुटिलमसूर्यसेनं वंशूलपालि खड्ग
गं खड्गस्फटं तमरुकसहित [illegible] कपालनमामि ॥ इति [illegible]
नविंशतिमन्त्रं विधियमिषुर्णमस्तु ॥ [illegible] ॥ [illegible]
लं ॥ ॥ [illegible] ॥ ॐ ह्रीं [illegible] सूर्याय [illegible]
धीमित्र [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥
ॐ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥ ॐ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥ ॐ
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥ ॐ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

कंनाम्नूकनं ॥ ॥ गणपतिपूजनं ॥ कुंकुमेन ॥ पश्चिमनदक्षिणेण ॥
दक्षिणे ढुंढूलयं ॥ ढुंढूनेशमक्ष्मी ॥ ऋषुरक्तं आयसिमा गरवा ॥ कुंकुमेन
॥ दक्षिणे विरूपदक्षका ॥ ढुंढूने सामदेवानां वाउआयत्तिभुमध्ये ॥ ॐ
वक्रतुंड समीग कुं स्वयमव दुनासनं । गरवाउतुदयंकृत्वा कानयं
७ ॥ गणपतीश्रियस्वधूपः ॥ ॥ ॐ सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य
काम्यहं । सनिमधामयासिष७स्वाहा ॥ ॥ नवग्रहपूजनं ॥
ॐ ह्रीं हय ग्रं मयवा ग्रं मनामा ग्रं मं तिला ग्रं मसू न्ता ग्रं मरवला ग्रं म

पिबेंगम ग्रं मनव ग्रं मस्वामा [illegible] मा ग्रं मनीवाता ग्रं मरगा धूमा ग्रं मन
स्वना ग्रं मअङ्गनकल्याताम ॥ दीक्षिपूजनं ॥ ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥ कुंकु
मनं ॥ ॐ त्रिवग्रंगई सर्वंअर्कवा ऐ हूनस्यआनः पतिनेकभ्रूसी
७ । सदाभानवृषिवीज्ञाम देवान स्ति देवायरु विस्ता चिरध्यम ॥ ॥
ॐ यज्ञान मयपदुः यद्धाक्षिपदुन ग्रंथ । तस्मात्ऊ सियद्धाक्षि
मनसीरस्तूलनाम्यहं ॥ सर्वतुनवतावगद्वयपर्वं नवतान्विधाय ॥ ॥
ॐ नमो नासि दुकमसद्म तमसिधामनामासि प्रियं देवानामनाधृः

॥ देवयजनमसि ॥ पूजानिवेदनं ॥ ॥ ॐ श्री सूर्य ॥ सूर्यं निवेदयामि ॥
ॐ का० सप्ति तुरंग छायापति ताराहृदय ॥ सहस्रकिरणं । विष्णुरूपं नमाम
सूर्य ॥ पूजा सू कृत्वा । पतिनाम० सहस्रभानाय पयसा समर्पयामि ॥ हिरण्य
सवितृ सकल निवेदनं ॥ ॥ ॐ गणानां त्वा ॥ गिरिजासुतं गणपतये नमः ॥ ॐ
कल्याण सा य देवस्य सवितु भर्ग वरेण्यं [illegible] ॥ लक्ष्मी
पूजनं ॥ ॥ ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजां । च
न्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ तां म आवह जातवेदो

लक्ष्मीमनपगामिनीं ॥ लक्ष्मीपूजनं ॥ ॥ ॐ ह्रीं सूर्यं ॥ कावेर
कनं ॥ ... ॥ ॐ ॐ न्नमात्
मनः ० हिमाद्रि मन्त्र ० समिधीमहि । तन्नः ... ० सहस्र
ः सहस्रकं । अत्र युसपन्न ... ० वरदा ... ॥ शिवाय
त्रयस्त्रिंशद्यामसीय ॥ काम्य निवेदनं ॥ समर्पयामि ॥ दुर्गा
कुली ॥ ... यथा ... ॥ नवग्रह पूजन
नं ॥ ॐ भूर्लोकाय स्वाहा ॥ ॐ भुवर्लोकाय स्वाहा ॥ ॐ स्वर्लोकाय स्वाहा ॥ ॐ

महर्लोकाय स्वाहा ॥ ॐ जनर्लोकाय स्वाहा ॥ ॐ तपर्लोकाय स्वाहा ॥ ॐ सत्य
लोकाय स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःका भृता वृधः भूतस्का स्वभृता वृधः ॥ घृत घृ
तास्य धृत्य धृत्मो क्रियाजोनामस्नामस्म धृम्न्य ध्वज्वीयमानां ॥ कांड कृत्तु पूज
नं ॥ ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपां रे
तांसि जिन्वति ॥ ॥
अग्निर्निर्मुक्तं ॥ ॐ नमो हनं वलगहनं वैष्णवीं मिदमहं केवल
गमृत्क्रिया मि ॥ ॐ मम निष्ट्यो यममामा ध्यो नित्यमा नेदमहं केवलगमृ

स
त्क्रियामि यम्मसमानाय समनाना नित्यमानेदमहं केवलगमृत्क्रिया
मि यम्मस्य स्वयं सस्यं स्वं निवमानेदमहं केवलगमृत्क्रियामि
यम्म सजातोयम राजानो नित्यमानो हत्या क्रियामि ॥ बलि ॥ ॐ अ
श्वावत्व ॥ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभि नो मुखा
करत्प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ अश्वाकर्णविलेन ॥ ॐ कद्रुद्राय प्र
चेतसे स्वाहा ॥ ३ ॥ पूर्णाहुतिः ॥ ॐ कद्रुद्रायसमग्निं पद्धिहोमा मिदूर्वयमनाद्वैग
कद्रुश्रि पुवाहे ॥ कद्रुद्रायसमग्निं संपयनि ॥ वहि हिमि पञ्च ॥ इत्यस्य

णीनं ॥ ॐ ह्रीं आ अमितगाजा मजंदौ स्वस्या हृद्यं [illegible] वद्धतुभुजा सर्वं ॥
गन्धपुष्पाणि ॥ ॐ नांदं दयाय अश्वत्थादि ० सुवर्णगणपूजनं ॥ ॐ
मनुबु ॥ ॐ श्री भगवताय विद्महे सुरज्येष्ठाय धीमहि । तन्नो वह्नि
प्रचोदयात् ॥ गायत्री मन्त्रसमर्पणं ॥ धेनुमुद्रा पूजनं ॥ नमो
भूमि सूर्याय ॥ हुं फट् ॥ अथ आसनं ॥ ॐ अग्निमित्रं कीर्तिं [illegible] त्वा न
सन्तु अस्य भुवनं विष्णु सूर्य लिङ्गं ध्यात्वा ॥ आनीलवर्णं विशिष्ट कृ ॥ ॐ पृ
थ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ पृथ्वी ॥

स्यपृष्ठ वारत्व भीतनु आधारपृथिवी पूजनं थ ॥ अग्निस्तुति पूजा
दक्षिणीकृत ॥ अजस्रान स्यपुत्रक कार्य्यं पुण्यस्थापन मृत्कुम्भ
स्थ ॥ ॐ मङ्गि कृत्स्न ० पृथिवि ० गायत्री आय सुवर्णा स्वाहा सर्वी
र्यायमानुदेवता ॥ सवका ० ॐ स्वा [illegible] कि स्वाहा ॥ ॥ स्थापितदेवान
॥ अग्निस्थापनं ॥ ॐ स्वस्ति आस्मिनी वामि स्वादिय २०७ ॥ अग्निपूजन्द
॥ वासि आ ॥ ॐ मर्माणि तं मर्माणि स्काटआ मि सामु स्वाहा नाजा मे भवा नृ
वर्षालक्षं ॥ उपाधिनी आवर्णस्कन्धलो पुजाय कर्म स्थानु देवा मन्त्र ॥

॥ ॥ आसनशुद्धिमन्त्रः ॥ पृथ्वीमन्त्रस्य ऋषिर्भक्त्या ॥ ॐ पृथ्वीति मन्त्र
स्योऽग्निः पृथिव्यां पृष्ठे विनियोगाधीना दिवसं । तेजसा नमः सहसा
पृष्ठोऽग्निः सनादिश्चासन निमन्त्र्यतु नमः ॥ अग्निसमूहनं ॥ ॐ अग्नि
प्रयुङ्क्ष ॥ ॥ पूजाधारादिवेदपूजासनं ॥ कूर्मासनं ॥ ॐ ऋग्वे
दाय सं ठ नमासनं २ ॥ ॐ यजुर्वेदाय सं ठ नमासनं २ ॥ ॐ सामवेदाय
सं ठ नमासनं २ ॥ ॐ अथर्ववेदाय सं ठ नमासनं २ ॥ सामिधपराग्निभ
गा ॥ ऋग्वेदः ॥ ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं । होतारं रत्न

धातमम् ॥ पूर्ववेदावाहनं ॥ ॐ इषे त्वोर्जे त्वा ॥ दक्षिणावाहनं ॥ ॐ अग्न
आयाहि ॥ पश्चिमवेदावाहनं ॥ ॐ शन्नो देवी ॥ उत्तरवेदावाहनं ॥ ॥
॥ ॥ ॐ ऋग्वेदाय अग्निऋषये गायत्री छन्दसे ब्रह्मदेवताय गायत्री छन्दसे न
मः ॥ ॐ यजुर्वेदाय वायु ऋषये गोत्राय ब्रह्म देवताय त्रिष्टुप् छन्दसे
नमः ॥ ॐ सामवेदाय सूर्य ऋषये गोत्राय रुद्र देवताय जगती छन्द
से नमः ॥ ॐ अथर्ववेदाय अथर्वाङ्गिरस ऋषये गोत्राय ईन्द्र देवताय अनुष्टु
प् छन्दसे नमः ॥ ॥ कूर्मपृष्ठ मालापूजनं ॥ ॐ ह्रीं ... रक्षाय

गजासनाय सूर्याधिपतये २॥ ॐ [illegible] स्वाहा [illegible] गासनाय
[illegible]धिपतये २॥ ॐ अमाय [illegible] स्वाहा य[illegible]सनाय [illegible]नाधिप
तये २॥ ॐ [illegible] स्वाहा यनवाहनाय [illegible]साधिपतये २॥
ॐ [illegible] स्वाहा य[illegible]नासनाय [illegible]लाधिपतये २॥ ॐ वा
[illegible]य [illegible] स्वाहा य[illegible]वाहनाय [illegible]नाधिपतये २॥ ॐ [illegible]नाय
[illegible] स्वाहा [illegible]श्ववाहनाय [illegible]नाधिपतये २॥ ॐ [illegible]नाय [illegible]
[illegible] स्वाहा [illegible] सनाय [illegible]नाधिपतये २॥ ॐ [illegible]

स्वाहाय [illegible]सनाय [illegible]लाधिपतये २॥ ॐ [illegible]
स्वाहा [illegible]सनाय [illegible]नाधिपतये २॥ ॥ ॐ [illegible]ये २॥ ॐ [illegible]
ये २॥ ॐ [illegible]ये २॥ ॥[illegible]॥ ॐ [illegible]॥
[illegible]॥ ॐ [illegible]
[illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ ॐ [illegible] २॥ ॐ [illegible]

[illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible] ॥
[illegible] ॥ ॥ ॐ [illegible] ॥ [illegible] पूजनं ॥ ॐ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॐ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ॐ [illegible]
[illegible] ॥ ॐ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] पूजनं ॥ ॥ [illegible] पूजनं ॥ [illegible] ॥ ॐ [illegible]
[illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible]
नं ॥ [illegible] पूजनं ॥ ॐ [illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible] स्वाहा ॥
ॐ [illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible] ॥ ॥ ॐ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॥ ॐ [illegible] ॥ [illegible] ॥

॥ ॥ पूर्वदंतं त्कर्मणात्रज्ञाणस्वीकार्ड्मं ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं २ ॥ ॐ प्र
जापतेन त्वद् २ ॥ ॐ सहस्रशीर्षा ॥ ॐ दध्यङ्मा २ ॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं ॥ ॥ ॐ त्वनी
मा अर २ ॥ ॐ अग्नि ह्या २ ॥ ॐ व्रमूर्णा यर २ ॥ ॐ अग्या मन अर २ ॥ ॐ विष्णु अ
२ ॥ ॐ [illegible] ॥ ॐ इदं विष्णु ॥ ॐ नमोस्तु नीलग्री ॥ ॐ अग्नि मू
र्धान ॥ ॐ कयानश्चित्र आभुव ॥ कू शी ब्रह्मनादि विधि विदि कृत्य गि हुं तन मं
॥ ४ ॥ ॥ ततो अथ आर विधि भित्र नुषानकाल शा मुर्न ॥ ॥ ॐ संपूर्ह
कलशा यमू त्र्यंऽ थात्र अ भुसूर्वा में स्वात्री स हि तायं ॐ मासन २ पू

र्णं २ ॥ ततो द्रागाह्निर्मं ॥ ॐ तत्त्वायामि ॥ ॐ दधिक्राव्णो ॥ ॐ रुद्रमन्यु
पूर्वि ॥ ॐ आपो ह्यास्मान्मा ॥ ॐ अस्य कृष्णा ॥ ॐ यद्क्रन्द ॥ ॐ य
ज्ञानेन ॥ ॐ स्योना पृथिवी ॥ ॐ अनयन्त्रा ॥ ॐ आमिन्दु ॥ ॐ द्यावा
दवी ॥ ॐ वल्गाविभृंभा ॥ ॐ युञ्जे अंमन ॥ ॐ इदं विष्णु ॥ ॐ अग्
निमीळे ॥ ॐ रंअेहो ॐ ॥ ॐ अग्न आयाहि ॥ ॐ शन्नोदेवी ॥ ॐ इः
षेत्वा ॥ ॐ नदी सः ॥ ॐ गणानां त्वा ॥ ॐ बृहस्पते ॥ ॐ नावको
नः ॥ ॐ पीवस्व ॥ ॐ अस्माक मिन्द्रः ॥ ॐ नमो वस्तुनाथ ॥ ॐ सप्त

पूजां ॥ ॐ अमुसीक स्नात्वा ॥ देवीध्यानावाहनं ॥ ॥ नमः कलशार्च

नं ॥ ॐ सम्पूर्णकलशायनमः पुष्पं ... स्थापयामि ... सप्तसिद्धिनायक

दमासनं २ ॥ पूजां २ ॥ ॐ आधारशक्तिभ्यो २ ॥ ॐ कूर्मासनाय २ ॥

ॐ सिंहासनाय २ ॥ ॥ ध्यानं ॥ ॐ कुमसिंदुरविन दिव्यं कीनक

धूप दीप मृत्यं नकेवक्तं जिनवध वस्तु दूर्जं मदंश्च तं ॥ त्रिमू

लाक्षवर्दवं वनाकलशं ध्यायेत् ॥ ग्राम वृक्षागकार्यदेवी ॥ द्वि

भुजावनवर्ण ॥ कुमासनलाल भूमी ॥ स्तनाम्बरविद्ध मिका

नवामूर्ती श्वेत्री आत्वा सर्वद्यायवधासनं ॥ ध्यानपूर्वं ॥ पू

जावाहनं ॥ देव ॥ ॐ आगच्छ कलशमभ्यां त्वाविशलिं देवः पून

रूजां विवर्तस्नमानः सहस्रं धृ ... भानायन्य स्तवीयुनर्भा ॥ विश

मास्तुभिः ॥ ॐ आयमगिरिजसूनेसन्तवी मनुपूर्दे संमसतवायप

त्रिशू ॥ आसन [illegible] पन्थामनूर्त ठितवन्त्याक्षि यद्गृणुया सिवामर्व

॥ ॐ निकानिवेशविविनयवसंगमेनवाजकामाविदिवसूमर्न मक्षि ॥

यदीनवांविसृजनक्षिभीनाक्षवीजनामाप्रभुमनदृदंगजमें ॥ ॐ य

ॐ नमः सन्तस्वनीमयियक्किंसमुगानसः सनस्वनीतुपंडीश्वामा
टेरशेनवसासीगु॥ ॐ वनूणस्याडेन नमसिद्धनूणस्याद्धेरसऊंनि
ह्मोद्वनूणस्याम्मसदद्य सिद्धनूणस्याम नसदनमसिद्धनूणस्याग्र
नसदनमासीद॥ ॐ उपहूनं॥ समुद्रादूर्म्मिर्मधुमां उं उदानदू
या ॐ शुनासमम्मतत्वमानक। घृतस्यनामगुह्यं यदस्ति जिह्वादे
वानाममृतस्यनाभिः॥ ॐ सर्पिरसिमयः॥ ॐ वृष्णमस्मान॥ ॐ ॐ
टोविश्व॥ ॐ नमः शंभवा॥ ॐ त्र्यम्बकं॥ ॐ हिरण्यगर्भः सु॥ ॥ देवी

कलशार्चनं॥ ॥अथसप्तमृत्तिकार्चनं॥ ॐ वाचस्पतिः सः पिबतुः सो
म्यास्तः शिवनाड्या वापृथिवी अन्तरिक्ष। घृतानः पातुदु निनावे
मान कामा हू तुं जुहस भमस्य शीशन॥ ॐ महो द्यौः॥ ॐ यस्यकूर्म्मो
॥ ॐ मीवान सोमो द्धु शमनूतत्वा वानआस्ता गंधर्व निस्स हुवाजं
यज्ञः अर्वकावद्धः घृतडेरना ९ द्वि णं द्वि शकू १ तणय यूय
द्धः॥ ॐ वद्धसाम्हा गोमिसि नियस्स भवसु २ ॐ दनमह भवद्धो हि मिह्या
मीटमह भवद्धो धमस्मकू मोन जामिघृ नन्यायावापृथिवी ताञ्चुवाथं

ह्याय स्का का ना म स्प्रिया अस्य द्वा तु स्वा का स्वा हा ह्व म इ डुर्ड्ने ल सं
सा नृ लं ग स्व न म ॥ ॐ नृ य ० स द सु मृ मि हि ः स द स्व न ः स मू द र्वं
व य घ र थ स र्य ः सा ष्ठ स्य म द्दि मा गृ र नी स वा य र्म्न कू ष्वि घ गा ओ ॥
ॐ प्रजाय प नी न ॥ ॐ स य क्ष्मू म य ः ॥ ॥ ॐ स म पू जि बा जं मि ॥
॥ ॥ न वा गा ण य स्ला ड्र्नं ॥ ॐ म णी नां स्वा ॥ ॐ न मा ग न स्या ॥
ॐ मृ नी स न र्या य न वा य भ्म न र्या य न ण । न भ्म न र्या य न य ह्र भ्म
न र्या य न र ण्ण र भ्म न र्या य न मा स्मा न भ्म न र्या य न प्रजा भ्म ने र्या

य न य नू स्म न र्या य न ग णी भ्म न र्या य न म णी भ्म सा द्वि ल म न ॥
॥ ॥ ॐ जि न न न स्या ड्र्नं ॥ ॥ न वा व लि पू जा नं ॥ ॐ न मो वै तु
णा य ॥ ॐ ज्ञा न ब्वं द सं ॥ ॐ नू ष्ठ बा य ॥ ॥ ॐ नि व ल्या ड्र्न
॥ ॥ न वा णो ण स पू जा नं ॥ ॐ नू स्य रं गी ः ॥ ॐ नू दि वि ष्णी न
द्वि वि नू न ल्क स्म द्वि रिं स्म्री मा स य मा स पू त ः । वि ष्वि दे वा नू दि
मि ऊ म म व द्वि मि ऊ मि ह्वं ॥ ॐ मा न स्का के ॥ ॐ र म द्वो ऊ ॥
ॐ म म स्व दे स्व [redacted] मि आ स टे द्वि न य वा नू स्व द सा म्मा म नू य

ः प्रमो श्री म्हुनि नवडीनीं हृदय श्रवायदः श्रिसहिनि ॥ ॥ ॐ ...
...पूजनं ॥ ॥ ततः ॐ श्री ... पूजनं ॥ ॐ व्रह्म यज्ञानं ॥ ॐ
नमः शंभवाय ॥ ॐ अनुवानं ॥ ॐ यस्य कुर्मो ॥ ॐ हिमानवाद
॥ ॐ ह्रैं [illegible] नु देवी हिरण्मा मनुमानु वर्त्मा गोतलवनुय । धन्वदेवी
हिरण्मामनुमानु वर्त्मा गोलवं । देवं सिंह्य जमानं देवीधृ हिरण्मं
मानुमी श्वनु वर्त्मा गोतवनु ॥ ॐ जातवेदसं ॥ ॐ किनु श्रेवर्सु ॥
॥ ॥ ॐ सितलाश्री पूजनं ॥ ॥ ततः कि... पूजनं ॥ ॐ आकृ

ष्णे ॥ ॐ श्रं विष्णु ॥ ॐ नमः शंभवाय ॥ ॐ गणानां त्वा ॥ ॐ नमाव
तु शान्य ॥ ॐ नीवान ॥ ॐ आ ह्रं समो आ तु आनानां यँव च्चनस्यनी
तुं नमनु । येवाव मंत्र शंगमतस्यः सधस्थियानमः ॥ ॐ वृहस्पते ॥
ॐ नमः शंग वयय शुयम यँवनमः ॥ ॐ अयय हीमायवनमो ॥
स्तव धायवदूमंवधायवनमाः ॥ कुव हनीयस्यवनमावृकस्माद
त्रिकंश्म मानमस्कानाय ॥ ॐ जातवेदसे ॥ ॐ श्री श्रुम ॥ ॐ विष्णु
नश्रीदु ॥ ॥ ॐ सितलाश्री पूजनं ॥ ॥ ततः ... पूजनं ॥ ॐ

आकेछ ॥ ॐ इन्द्रमन्द्रवा ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा ॥ ॐ उदुद्युस्त्वाग्ने ॥ ॐ
वृहस्यमे ॥ ॐ अग्न्रात्यागे ॥ ॐ शन्नोदेवी ॥ ॐ कयानश्चित्र ॥ ॐ
कनुकर्वं ॥ ॐ ताअस्यसूद ॥ इतिनवगणाज्ञनं ॥ ॥ ॐ अथ
गोलोकयालाज्ञनं ॥ ॐ ताकाव मिन्द्र ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा ॥ ॐ यमन
द्वर्लं त्रिमयंवमायुनगि ॐ वनपिपथमाजुश्चा निरूत्न । गन्धर्वाणि पू
स्यवनशनामसमृस्कस्मूनाटसूवसवाविनवाह्न ॥ ॐ यश्चेत्यवी निर्ण
मिवाहवहवयथाशशीवास्वजिविह्रत्वं । नन्के मिथ्याम्याकयु आनम

श्याद्रथेवं पिरुसम्द्रिपसूवनसोक्तयैयदूश्रकाय ॥ ॐ इन्द्रमस्माक
मूत ॥ ॐ तवत्याजावुद ॥ ॐ कविटंगव्यवस्मायवश्चि अथादात्यनु
पूर्व्हिवृय । ॐ हस्त्रैवाह्रनूक्तिगाकत्वानियवक्षिनमडाकिं वाउकि
॥ ॐ नुमीशनंकगमस्कसूसत्याविंश्रियां जिन्नमवसहूवयं । पू
वा लीयथावेदसामसहूधनक्वनायायुनदतुः स्वकत्य ॥ ॐ
दीलियद्वा ॥ ॐ वृद्धशस्यमे ॥ ॥ इतिगोलोकयालाज्ञनं ॥ ॥
अथवंगोलोकयालाज्ञनं ॥ ॐ गणानान्त्वा ॥ ॐ अस्वेअम्बिके ॥ ॐ

ज्वालानियुक्तिः ॥ ॐ घृतंघृत ॥ ॐ उदकपिबतु ॥ ॥ ॐ तिलगुड
लोकेपालाहुतं ॥ ॥ ॐ अग्नयेस्विष्टकृते हुतं ॥ ॐ सप्तजिह्वा ॥
ॐ ब्रह्मस्य ॥ ॐ यानं तुः ॥ ॐ यत्नुमूर्तं ॥ ॐ नमीशानं ॥ ॥
ॐ तिलगुडयवकाहुतं ॥ ॥ मानसस्नादिपूजानं ॥ ॐ अर्घं
सः यन्तु ० मितमासा जु हानुसम्प्रदः ॥ जु स्नानादानिमन्त्र
नौ द्वितिपि ह० सूत्र अनुमं ॥ ॐ जुगपयकालदिनीयानियकालि
त्रिलस्य हतीया आमस्य चतुर्थी टिल्ले पञ्चमी स्ता ० मश्री

मसू ० सप्तमी वृद्धस्य नवमस्य आम्भानवमी धामदशमी
सूर्य्य एकादशी द्वादशमस्य द्वादशमस्य चतुर्दशी ॥ ॐ ० स्ता ० स्त्रा
ः यत्कलिः मनस्स तैत्तियकालि ... स्य दमीया आज ... चतुर्थी
पञ्चमी ... स्य ... मसा ः अष्टमी सप्तमी ० सप्तमी ... नवमी
... दशमी ... एकादशी ... स्य द्वादशी ... चतुर्दशी आ
वायुभि ... मान्दवानामूलमं ॥ ॐ नक्षत्र
ः स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा ... भ्यः स्वाहा ... स्वाहा

मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहा र्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा
द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा नक्षत्रेभ्य
ः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहा दित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्प
तिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा ॥
ॐ अग्नेराग्नेरम ॥ ॐ अग्ने स्वृष्टवो [illegible] मृगस्य [illegible] जायपत्या [illegible]
गीवाष्मा [illegible] नवाटयूत स्मा हस्मान स्वगीभ [illegible] भस्मा [illegible] सीना

[illegible] सोमाय [illegible] स्वाहा [illegible] यामी [illegible]
[illegible] लाम [illegible] यज्ञा [illegible] पूर्क [illegible]
यस्य [illegible] ॥ ॐ सम्बुस्सनांसिया [illegible] सनासी
[illegible] सनांसी [illegible] सिद्धसनासि । [illegible] कल्यकामस्यो
[illegible] कल्यकाम [illegible] मासा [illegible] कल्यकाम [illegible] कल्यकामृताव [illegible]
कल्यका [illegible] कल्यकाम ॥ [illegible] यायसा
गय । [illegible] ॥ ॐ [illegible]

गउजायुकीतमंकृतायाक्लिबदर्गीलुंबं॰का ऐकल्पियनन्द्वाणवाय
क्षिकत्तेलिं॰मांक्कन्हामसल्राकाणुस्मृलुबंगोक्षुकुमस्ककायः
गोघानंकुधेयांगम्हिकृंबनेक्लिकृमाणडुयमिस्कमिदुक्कुनुय
वनकाव्रींगायानंकैलगम॥ॐसमिवा०संकल्पयाथा०सीजिआवा
विक्कुसमनस्यमानी।ॐअमृकुंमनिसंवसानी॥ॐशीश्रवं॥ॐ
स्वक्लिनंकृस्वाब॥१॥ॐआःकलिनी॥ॐजुन्नयवं॥ॐधूतमि
॥ॐनैआमि॥ॐनमःयर्लुअवयर्लुसँवागअडडकृनमा।ऐअव

लिघ्रतवनमत्राखिदनवनमःशृकृह्याधनुकृह्यश्रवानमान
मोतः किविकंस्याटयाना०हृदयंस्यानमोविग्रिन्दकंस्यानमाहि
क्लिणकंस्यानमःजानिर्दमंस्यः॥ॐसनोहूमि॥ ॥जानस्कां
॥जुगन्धांकि॥ ॥ ॥नवानाकुंविर्णवेनतुकार्ठनं॥ ॥
ॐजूआवाहि४॥ॐवक्ष्ण२॥ॐपृष्पासनायरु॥ॐकैशासना
यरु॥ ॥ध्यानं॥ॐमीनबीमंवक्रुड्डाडू,वक्ष्णवदुयाननीहै
सम्यानजुहिमवाल. मकमालायकमणुलू॥वक्ष्णंध्यानयुर्ध्वो२॥

ग्रुमाङ्गीरसि ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॐ प्रजापतयेनस्व ॥ ॐ ब्रह्मणस्पत ॥
५२ ॐ ऋतुवृंश्रवाकरणे ॥ ॥ कूरुकलशपूजा ॥ ॐ धनाय २ ॥ ॐ पृ
थ्वी मां ॥ ॐ भूनाय २ ॥ ॐ हंदप्रेक्कू ॥ ॐ सोमाय २ ॥ ॐ हंसा वशुचि
षदसमौ हि तडमो स्तूयवसिनीमसवदंद सह्याः। अस्क [redacted] ज्ञा यादसी:
षिष्कवंदाधर्थयूविनीसनिमामयूषेः स्वाहा ॥ ॐ अप्स्वा २ ॥ ॐ
टंवं शुमीटवंश्चा धामनं जातं टी कुस भूतं कल्याय को दुर्गीयस्त्री नय
नीमा सिद्धिनवं स्वंगाष्ठुसावदनं टद्वीदूर्ग्या आयूर्ष्मा निर्द्री टि ष्टुंप

जास्मा निर्द्री टिष्ट समवमधाम्स ष्टूर्म पृथिव्याः ॥ ॐ अनिलाय २ ॥
ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचयः पार्थिवानि विममेरजांसि । योअ
स्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा ॥ [redacted]
॥ ॐ अनलाय २ ॥ ॐ दिवोवा विष्णउतवा पृथिव्यामहोवा
विष्णउरोरन्तरिक्षात् । उभाहि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत
सव्याद्विष्णवे त्वा ॥ ॐ अपहूय २ ॥ ॐ प्रतद्विष्णु स्तवते वीर्येण
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति

सुवनानि विध्वंसः ॥ ॐ कमलायव ॥ ॐ विघ्नान्तकाय ॥ ॥ वज्रदेवकनल
शार्दुलं ॥ ॥ भृकुटी ॥ ॐ नमः शम्भवाय ॥ ॥ अर्क ॥ ॐ अग्नये प्रज्व
लितेजः प्रदीनः स्वमनोलव प्रज्वलितेजः सन्तुषि विज्वलदीप्तनन्दा
शिखाहा ॥ ॥ अग्नि ॥ ॐ प्रज्वलितेजः सर्वकर्मसाधक भगवद्वरदस्यः
शिः प्रवालदेवीदत्ताद्गनः स्वाहा ॥ ॥ नाग ॥ ॐ नमोऽस्तु सर्वधर्मा
णां ॥ समानां ... विमनज्वालाहुतं ॥ ॥ ॥ ... साधनं ॥
ॐ नमश्चिन्तामणि ... नेत्र ... भविष्यति ... नानि ... विध्व

हनीयात् ... स्काली वज्र स्काली समन्तात् कुन हृदयमनसूनी
समित्रैः ... विलासात् ... लमनलद
र्श दृग्ध्वल कर्ण ... कामदत्तं दृष्टिवी दिशां ताडित ... नाथ
आदौ ॥ ॥ ॐ वज्रधात्वा ॥ ... ॥ ॐ ओं नमो नमः ॥ विधा
सुगतं चंपूजं ॥ ॐ आविर्भूतस्वा ॥ अग्निज्वलनं ॥ ॥ ॐ विश्व
द ॥ अग्निज्वलनं ॥ कल्याणार्थं विश्वाय ॥ ॥ ... दीपकारोपि ॥
ॐ वज्रध्यानत्वा ॥ अग्निज्वालाकर्मार्थं यथा कार्यं ॥ ॥ ॐ सर्व

हृ उनृस्व ॥ उत्तरोष्ठं ॥ ॐ अनिशितोसि ॥ स्रुक्संमार्जनं ॥ ॐ प्रत्यु
ष्टो हिं सृति ॥ प्रोक्षणीपूरणं ॥ ॐ देवीरापो अपान्नपाद्यो व ऊर्म्मि
र्हविष्य इन्द्रियावान्मदिन्तमः । तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा
वयूर्वं ॥ प्रोक्षणीमन्त्रणं ॥ पात्रप्रोक्षणं ॥ ॐ युष्मा इन्द्रो वृणीत वृत्र
तूर्य्ये यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्य्ये प्रोक्षिता स्थ ॥ अग्निर्वाम दी
धयं ॥ ॐ अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षा
मि ॥ प्रोक्षणीशिष्टवरणं ॥ ॐ दैव्याय कर्म्मणे शुन्धध्वं

न्यधुं देवयज्यायै यद्वा शुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि ॥ सवित
स्तु सिञ्चनं ॥ ॥ अग्नौ प्रोक्षणीपात्रसिञ्चनं नो निधाय ॥
॥ ॥ ॐ देवस्य त्वा ॥ आज्यस्थालीमध्ये स्रुवग्रहणं ॥ ॐ प्रत्यु
ष्टं रक्षः ॥ स्रुवसंमार्जनं ॥ ॐ अनिशितोसि ॥ स्रुक्संमार्जनं
॥ ॐ महीनां पयोसि वर्च्चोदा असि वर्च्चो मे देहि । वृत्रस्यासि क
नीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि ॥ आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः
॥ ॥ ॐ शर्म्मास्यवधूतं रक्षोवधूता अरातयो दित्यास्त्वगसि

ज्ञितुरसि त्वादितिर्वृन्तु ॥ कलशे कुंभ नरुकौ निधारा ॥ ॐ पृथिवसि
वानस्य धर्त्री अस्या सिद्धपृथ्वी दृंहं पृथिवीं त्वा द्विवास्त्वर्यन्तु ॥ कलशे जि
तुदूर्वालाक्षधारा ॥ ॥ सोधाजवापूरिनाक्षधारा ॥ ॐ कल्याण ॥ ॐ
पूर्विसी आसालासिविश्वकर्मा ध्रुवाद्रुह्य नन्ता समुद्रा वयअ
सि ॥ कलशेतत्रिनीकूज्जन ॥ ॥ ॐ अग्नेभ्यो कल्पसिवाद्यो विसर्जनं
॥ कलशे पूजनं ॥ स्वस्तीमधयत्वा पृथ्वा मि ॥ बृहज्ज्ञावासिवानस्य
त्वः सं स्वर्द्दे देवेभ्यः हविः ॥ कलशे पूजीत्वा ॥ ॐ समीक्षश्च सानि

समीक्ष ॥ रत्नं अंतत्कलशे निधारा ॥ ॐ बृहज्ज्ञावासिवानस्य त्वः ॥
पूर्णसात्राज ॥ ॐ हविः कद्र हहु विश्वदेहि ॥ पूर्णल ठ दूष
लस्कान्न ॥ ॐ कुकूटो सिमपृजिद्द मसृक्ते मा वदस्या वया
संघाव सुंघावं ॥ दूर्वां ॥ ॐ स्यावर्वाद्वमसि ॥ सर्पवल्ली ॥
प्रसिद्धावर्ते वृद्धि वनु ॥ कलशे निधारा ॥ ॐ अगायूस अर्द्
ःसावापृक्तातूवामय्यः ॥ पुष्पाणि ॥ ॥ ॐ अयदक्कष्ठरक्षावापृथी
धिविन्नकृः ॥ कलशे वनं ॥ स्कान्नं ॥ ॐ देवावः सविता हि

वणुयानिःसृविगृणात्ववृक्षिदृदणयादिना ॥ ... ॥ ॐ
ध्ववयः श्रुन्यद्वं ॥ ॥ क्षिकुलकुलीक्षिणौ ॥ ... ध्यौवि
विनकुः ॥ उटवकं शवयगलि ॥ मं येवदि ... वं आधाव्यनश्रौ ॥ ...
याहाकीवगुउवाणूलानिधान ॥ वन्द्वनालि ... वयगाथावीवयु
धेनपूजणौ ॥ ॥ ॐ भौनमायार ॥ नमर्षकेविंश्वमिनयम
दग्निवृलिक्षकाश्वयगणुनवृक्षविश्वमनहंस्वन ॥ ॐ पकाणमृत ॥
पवि ईंगूरीवा ॥ ॥ ध्ववमसणावि उवकमावधालवृय धवावेन

यटउिकाक्षेदनतवलुकसिद्धास्काणनआनवलासदायनमज ॥
ॐ ऐं श्रौं ह्रीं ऽस्याह्रि ॥ ... कालीवगृज्वालीज्ञानिकुं ... धिनय
नं ॥ ॐ अयदकाजूस्नात्वाऽ सिधद्विबाः ॥ येनूआनिआमयु
श्री मानाजूस्न्याः सवृः ह्वधयायवृनकि ॥ यनापूर्वानिपूयुयव
वीयमिस्रीं लूकायुशूदायस्माऽ श्रोनि ॥ कृ ... ॥ नः
कायमवीर्ये ॥ यनमगावउानिमा ॥ ॐ नेत्रादक्षिस्यावकिर्व
सामदानमंत्रसः ॥ ऊहिवयमसानियमण ॐ ... मीहि ईवासया ॥

ध्मानिजुग्निकर्णं ॥ ॥ॐ देवस्य त्विजुः सप्तकर्णं ॥ ॐ गा वात्तमिन्द्
मि ॥ एतवेद्युज्ञमत्करणं ॥ ॐ ॐ अग्ना एव देवो आयुर्यो कर्णं ॥
॥ ॥दुविमावत्सूमालोटन ॥ प्रात्विजी यहि देवत्वा अग्ने सुत्वा ना
स्वा एवा ति आय ॥ दू मायुप्रमनाहिवाय द स्कात्स्य धना आगामिस्म
कर्णं ॥ ॐ सवितुः स्त्वं प्रसवउ स्पूनाम्या के देणया वेनं स्मुत्व
स्मूनाम्भि हिः ॥ अग्न्याप्युत्तनं ॥ दुषणानाम्भिमस्युकर्णं ॥ ॐ सवितु
र्वप्रसवउ स्पूनाम्या कि देणया विष्णुनस्तु पुष्पेत्तनाम्भि हिः ॥ अग्

स्वाम स्पूकर्णं ॥ ॐ स्ताकामि हुक्र ॥ अग्न्याय स्पूकर्णं ॥ अभिवात कन
द्विकजाहाडुत्वा मूकत्वतः ॥ वाकर्णं संस्कारदेयु हुव ॥ पुलम
ॐ यानि तस्था ॥ दुष्कनायूकर्णं ॥ ॐ देवीनाम्पतिक्तु आहानदी ॥
ॐ सुष्मा ॐ ॐ स्ते शिनु द्विजगणेतत्यं ॥ ॐ जुष्टाग्ने त्वाय दे वाका
मि ॥ अग्निग्राकर्णं ॥ ॐ कर्मास्यात्व मनसु इन्द्राग्नी ॥ इदं पा
कामि देवदिनसिवहि अग्ना ॥ इदं दं पाकामि वरुणीनामि [illegible] स्या
इदं पाकामि ॥ सर्वागाकर्णं ॥ ॐ वनादि देवमि ॥ अग्ने [illegible]

शु सिद्धयंत्रि लीकाय ॥ ॐ भूदितये शुद्धनम सिद्धि ह्म सुधा ह्म
शुं ह्मद सत्वाहनी ॥ मिश्वा सुस्का दैवयेः ॥ ॐ सुयम यस्वाहा
सुवनयक यस्वाहा ॥ दूवानायमय यस्वाहा ॥ रंगीश्रीदर्क यलिम
निधाय ॥ सयाविषदु ॥ क्लावरवतु श्रुत्वा विदीनधाय ॥ धाम
नीटह्निलकज्ञानसूकृतवः ॥ ॐ कृं कं वाकुर्व ॥ तयक्कान ॥
सुलाविज्जुणानं ॥ य वनासिन्दू नमः तालंकाम पृथ्वीय ॥ ॥
ॐ वषट्नमः २ ॥ ॐ विष्णु वं २ ॥ ॐ भू डायर २ ॥ ओं कालीपूज

नं ॥ ॥ ॐ वषट्नमः ३ ॥ ॐ विष्णु वं ३ ॥ ॐ लक्ष्मी ३ ॥ ॥ ॐ श्रं
गसिद्धयादि ॥ सुयसालकू सामाय ॥ यमू सिहाग कानय ॐ ॥
उकाम मयालिग ॥ स्वा ॥ उकं यथा दैवस्य नैवेद्य ॥ उयरागम
रगान्स ॥ अयथय ॥ ॥ ॥ सवाना दिवसमा ज्ञियमाल ॐ
॥ ॐ श्रीनिकलयनायस्वाहा ॥ धूपय ॥ ॐ कं तस्ययो नवसिद्ध
उस्यना हितसिमात्वा हि ७ स्री ॥ मासा हि ७ स्वाहा ॥ ॐ गर्ही
नायस्वाहा ॥ ॐ ग ह्री जू श्री मधीनाग ह्रीविनमयी नीं ॥ ग ह्री

ध्येस्याहृतस्या । स्मगर्हा कृणामसिस्वाहा ॥ ॐ भूं शंवनायस्वाहा
॥ ॐ स्वस्कि यंथास नू थैन स स्व च्योयरु न्दुम सा ०० थं । पूनर्द ध
मा गृमा क्रानृमा स ग भैस हिस्वाहा ॥ ॐ सीमस्कोमय नायस्वाहा
॥ ॐ मा हि हृ मा यृ भू दा न्तैस स्तु आकानासेवा भेदि । घृ णास्व
कू ल्याङ पांत्रिमस्तृ प श्रु ॥ भूनु स्वाहा ॥ ॐ आवाकर्णी ये स्वाहा ॥
ॐ कायस्वाहा कस्मै ०० कदामस्मै ०० धीमाधीकायस्वाहा सनूपका
यकायस्वाहा । विदी वेल्लानाय ०० दि हृस्वाहा दि लोमहीस्वाहा

दिलो स्मृतीकायस्वाहा सनस्वयेस्वाहा सनस्व येयावकाये ॥
स्वाहा सनस्व येवृद येस्वाहा पूक्ष स्वाहा पूक्ष पसधायस्वा
हा । पूक्षनन स्थिकाय ०० स्वस्न ०० स्वस्न तुत्रीमूयायस्वा
हा स्वस्नयपू नूमूयायस्वाहा विक्षु येस्वाहा विक्षु नहूयायस्वा
हा विक्षुवमि विविक्षायस्वाहा ॥ ॐ समसूनकेनायस्वाहा ॥
ॐ स्वमसूष्ठ जुरि ४ ॥ ॐ विक्षसनायस्वाहा ॥ ॐ यक्ष्मायक्ष्मी यो अ
त्र मिनायो याव दक्ष मे । पयजय समभुवो आक वेदर्सं प्रिय

भिं तंनस ० मितस्वाहा ॥ ॐ भूतावनामक नगी अस्वाहा ॥ ॐ यो
गायस्वाहा यानायस्वाहा ध्यानायस्वाहा व भूतस्वाहा ॥ श्री तयाय
स्वाहा वायेस्वाहा मनसे स्वाहा ॥ ॐ कलपा ननायस्वाहा ॥ ॐ या
ः हसिनी ॥ ॐ भूतपानायस्वाहा ॥ ॐ भूवणनेन ॥ ॐ भू
र्ववनयमना अस्वाहा ॥ ॐ कूयवीदवमनु श्रीमनः श्रिनस्वाहा
मलादिव । पूतमविर्नवा अमायश्रु नु भेनस्वाहा ॥
ॐ भूतवकननीयस्वाहा ॥ ॐ मृत्युनीदेवा ॥ ॥ ॐ कालीनेया

यस्वाहा ॥ ॐ नदंकन् हुलिः शृंगयामदवाने दुंपहंगुमाव
हिर्यर्यका ः ॥ स्त्रिमनेगेमुकृवा ० सस्कनूकिर्नृसमहिदव
हिंमंयदायुस्वाहा ॥ ॥ ॐ भूनव भनाअस्वाहा ॥ ॐ भूनेक
गुमनुनकेणुनामिषुक्ष्मानियक्षवनस्यानिर्यक्षिसः । दव
वीर्मनमामहस्नमृतीकाममहिस्त्यवक्षीभधायक्षवाहस
० स्तनी भानाजूसकुस्वाहा ॥ ॥ ॐ माकमी भुवनाय
स्वाहा ॥ ॐ वनैनदीक्वामाध्रामिटीक्वाध्रामिवक्षिना दहि

णाय डामाघ्राकिरोडयासस्यमाघ्नसस्वाहा ॥ ॥ॐ प्रमनाधी
वनायस्वाहा ॥ ॐ ऊर्ध्वरुममेघघ्न णया णससमुद्रवाधमविसर्ष्टम
रा धावक्य । जूथावक्षमा द्वियवश्रवानागसाज्ञाद्विमय
स्यामस्वाहा ॥ ॥ॐ मभावर्द्धनायस्वाहा ॥ ॐ आद्धर्षक ॥ ॥
ॐ विवाकायस्वाहा ॥ ॐ अग्नेःपत्नी विमहावद्धर्वनामू
सनीमूर्य । त्वद्दूतश्रासमणीनयस्वाहा ॥ ॥ॐ नुरु ...
हा ॥ ॐ मुष्वक ॥ ॥ॐ स्वाकामिरुविसर्जनायस्वाहा ॥

ॐ मातावमूर्त पृथिवीपृथीममवि प्रिंश्वयार्नवलानूसा । नां
विश्वी हृदवे मृत्तु रिः सं विदानः प्रजायमि हिंश्व कस्मा विमू
र्द्धरु स्वाहा ॥ ॥ॐ संमूर्वीकरणायस्वाहा ॥ ॐ एआहृदव
ति ॥ ॥ॐ समलाक्षीनायस्वाहा ॥ ॐ विश्वनाद्ध ॥ ॥
ॐ शानिवासाय स्वाहा ॥ ॐ सनार्द्दिति ॥ लाजाप्रकृप्रस्वाहि ॥
॥ ॥ नवोध्रनं ॥ मयानूर्पद्रीकाङ्क्षिः शकिदस्कादू
माणनः । कृमुं ... स्क रश्राईवकृष्णा. ब्रह्म लि वयावकयू मि

ः॥ सप्तवेनुहेवाक्रिज्ञा । ऽऽव शृकृदक्षिलोकम । स्वाहायस्वीसि
कावामे अग्न कु ॥ क्रिकाय्यकः ॥ ॥ ...२ ॥ ॥ ॐ स
मिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिं । आस्मिन् हव्या जुहोतनः
स्वाहा ... समिधमादाय ॥ ... ॥ ॐ तं त्वा
वाग्निरुवादिल्युकद्वायुरुदृवन्दुमा । मर्द्व ... ॐ ... ज्ञू
यः स प्रजापतिः ... स्वाहा ॥ ...
...होमं ॥ ... ॥ ... ॥ ... ः

...विधाय । ... वीर्यं ... ॥
॥ ॥ ... ॥ ॐ भूः प्रजापतये स्वाहा ॥
इदं प्रजापतये न मम ॥ ... ॥ ... ॥
... लिं ... ॥ ...
... ॥ ॥ ॐ ... ॥
...सिय ... ॥ ... ः
...सियर्द ... स्वेतु ... सि ...

ॐ सियार्द्वं संयीऊ सिन्धायद्वंमी दृंतु ॥ विसंबी र्युकु स्मावद्वि
हि वायमू द्वीर्यं ॥ ॐ जूत्मवाऊ ऊद्वाऊ स्वास त्रिन्द्धं स्वै वाऊ ऊि
म० सम्मा यी ॥ ऊयवमनमू लोरमा वाऊ ऽन ॥ ॐ ६० न्दुम्य न :
द्वां सिवाऊ सान्द्वयार्यं वाऊ ० मैं ७ ॥ वाऊ स्यान्नू पुस वंमा मनं
सह्रीमदि सिन्द्वाम वेव साकृ वाम द्वं ॥ यस्या सिर्द्धं विश्वंनु वन
मा विश्वं ॥ मस्या न्नौंद्वं वम विकाध म्भे सा विठ ७ ॥ वामकसं
२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२

वंकृयं ७ ॥ ऊयवमनकू ॥ वाम्नि न्यु ऊयं ७ ॥ पूषान ॥ ॐ कू
न्हाय २ ॥ ॐ वऊ दस्काय २ ॥ ॐ स्नूवा ध्मिपनय २ ॥ अं द्वन सि
न्दूर कस्रायवीन पूष्यान ॥ ॐ वा मान मिन्द्रं मिऊ ञ्वत्रं ॥ मन
दुस्ऊ आयमिंयं वला मान सं विन्हु ॥ ॥ ॐ नथ्थवा ग्निति किंर्यू
न्मु मिनासपूवान्नि धाऊ ॥ पूज्यार्द्धनं ॥ ॐ वृक्क२८२ ॥ ॐ प
दीनाय २ ॥ ॐ भृ२म्यैं वादिवेनु वैद्दाय २ ॥ ॐ ६० न्हा दिवनी
३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३३

लोकपालाय २ ॥ गणपतिदुर्गा स्कन्द क्षेत्रपालाय २ ॥ स
र्वकल्याणं दिनिर्वसंगलं स्याः २ ॥ पुनर्होमं पूर्णाहुतिं ॥ कुः
लेस्याधीनपूर्णाहुतिं नमस्तुलिकार्यं ७ ॥ नमस्तुलापूर्णं ॥ रु
पश्चिमाय २ ॥ ॐ वायुः पश्चिमाय २ ॥ उत्तराग्नये २ ॥ दिशे २
॥ विदिशे २ ॥ स्वर्गाय २ ॥ मर्त्याय २ ॥ पातालाय २ ॥ रुद्र
ये २ ॥ धात्रे २ ॥ स्कन्दाय २ ॥ सूर्याय २ ॥ योगीश्वराय २ ॥
६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६६

महायोगीश्वराय २ ॥ रुद्राय २ ॥ पूर्णाहुतिस्याः २ ॥ कामद
वनाय २ ॥ ॥ पुनर्होमपूर्णाहुतिमितिस्याः ७ ॥ सर्वकामद
स्याः २ ॥ पूर्णाहुतिपुनर्होमकर्मणे ॥ ततपश्चात्कर्मस्य समाचार
म ॥ दुरुपनमाटवस्यः ॥ ॥ कुशविलापनान ॥ दक्षिणा
स्वधा पितृस्यः ॥ ॥ पुनर्होमान ॥ दुपस्थानं ॥ ७ ॥
ॐ नमस्ते द्यावी सुमकण्लो दुर्द्धां धनज्या स्वाः ७ ॥ पुनर्देव दान
वदूर्त्यमवना द्यावापृथिवी ॥ पुवर्द्यावापृथिवीसृदिकर्द ॥

वस्यः ॐ न्तु जू अ नद विमा द स्वु हा सं अ । तिमां अं मिः स्वाहा ॥
॥ ॥ ॐ वैन पुवाडु स्याधाग दं ॥ ॐ विमि स्तुाय स्वाग ॥ ॥
मनपुंदू कोम ॥ ॐ जुम्न ये स्वाहा ॥ ॐ द मनृ ये स्वाग ॥ भामाय
स्वाहा ॥ ॐ दं भामाय ॥ जू म्नि भामा स्या स्वाहा ॥ ॐ द म न्नि भामा स्यं
॥ ॐ जू म्न जिं का मि नु कृ ड्वै ये स्या धा म्ह धा म्ह मल व अ प ू भ अ
हु भै स्वाहा ॥ जि हा दाम ॥ ॥ ॐ हि न थ्याये स्वाहा ॥ ॐ दं हि
य न्ध्रभै ॥ कनका भै स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ नकाये स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ कर्क

ये स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ सू ष न ये स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ जूम्निक ये स्वाहा ॥ ॐ दं
॥ जूस्कु नक ॥ ॐ य वि नं स्का ॥ ॐ मध्वा बहु नूपाय स्वाहा ॥ ॐ दं ॥
॥ घन धवगमता दूअ तितुवनाद धनद्व धनभट जिहा कु
दनं ॥ ॐ सफ नकू त्न स मि धः सफ जिह्वाः सफ मू मय सं फ धाम
प्रियामि सफ कौ ताः सफ धा स्वा यत नि सफू या नितायुण स्वधु म
नस्वाहा ॥ ॥ नमः यञुमाधुदाम ॥ ॐ ॐ याव नी वे ू
मनी हि हू न ० स्हु यव मि निमन बंद नस्वा । यु स्वा का नादसी वि स्र

वमं अध्वरुपृथिवीमसि भासयुमै स्वाहा ॥ ॐ ॐ दीविक्ष ॥ ॐ स्वात
स्मांक ॥ ॐ मन्त्र दूर्द्दंवहिनं पूनस्काम गुरुकमृत्तनतय ॐ मिनवद
नंतिजी वमनमदनम प्रवत्नमि नवदनमं सदीनास्यामि नवद
नमं हवधनवदनकाण ॥ ॐ त्रिनन्दवानामुद्गमदनीकंचकूर्मि
रुस्यवनूनस्याप्ते ॥ आभाआवायुपृथिवीभूक्ष त्रिस्तु ॐ हर्षन्तु ॥
स्माजगतास्कस्वमर्थे स्वाहा ॥ अनुस्वर्हविकनयेस्याग ॥ ॐ मिय
श्रीगच्छ हमे ॥ ॥ नमोब्रह्मा भूमि ॥ ॐ अर्घ्य दानाय स्वाहा ॥ ॐ

दं ॥ पृथिव्यै स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ अनन्ताय स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ वीतवर्म्मणे स्वाहा
॥ ॐ दं ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ सोमाय स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ प्रजापत
ये स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ कन्याभ्यः स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ लक्ष्मीभ्यः स्वाहा ॥
ॐ दं ॥ वागीश्वरीभ्यः स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ देवेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ दं ॥
ऋषिभ्यः स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ श्रियै स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ मेधायै स्वाहा
॥ ॐ दं ॥ प्रज्ञायै स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ भगवत्यै स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ सद
सस्पतये स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ अनुमतये स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ स्वाहा ॥ ॥

॥ ॥ यजुर्वेदाय स्वाहा ॥ इदं ॥ अन्तरिक्षाय स्वाहा ॥ इदं ॥
वायवे स्वाहा ॥ इदं ॥ स्रवमवर्णुअ स्वाहा ॥ इदं ॥ प्रजापतये स्वा-
हा ॥ इदं प्रजापतये न मम ॥ ॥ ॐ सामवेदाय स्वाहा ॥ इदं
सूर्याय स्वाहा ॥ इदं ॥ दिवे स्वाहा ॥ इदं ॥ नक्षवर्णुय स्वाहा
इदं ॥ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये न मम ॥ ॥ अथर्ववे-
दाय स्वाहा ॥ इदं ॥ दिग्भ्यः स्वाहा ॥ इदं ॥ चन्द्रमसे स्वाहा ॥
इदं ॥ कक्षवर्णुय स्वाहा ॥ इदं ॥ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं

पुं स्वाहि ॥ ॥ मनसि प्रजापतये इदं ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ इदं ॥ ॐ
भुवः स्वाहा ॥ इदं ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ इदं ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा
॥ इदं ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव या-
सिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि
प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदं अग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ॐ स त्वन्नो
अग्ने ऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व
नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥

ॐ अमसिद्धिवज्रमूर्त्तायां ॥ ॥ ॐ तद्यथा ॐ सर्वसत्वहिंसक्रिया:
शुद्ध सत्व मिन्द्रमयाकुसि । कुमारा अङ्क वज्रास्ययामा । धेहि:
हंअंजः स्वाहा ॥ ॐ अमसमागीर्ण ॥ ॥ ॐ अर्कं नर्सं वज्रूर्ण:
असहसु यह्रि आयानामविमवामहाकः । भगि नाजुअसवि
मोघविक्षूहिंश्रीमूर्त्य तुसमनूरः स्वर्की अः स्वाहा ॥ ॐ दीं
वजूर्णा असवि सं विक्षवविश्वयोदंवं स्यामनू हः स्वर्की:
हः ॥ ॥ ॐ हुस्वलमवर्जूर्णयानामनस्मधु विसद्धोमसेः गथा:
हंवा ।

ॐ कुथवअमादिद्यतुमवानाग सांकुदिमवं स्यामस्वाहा ॥ ॐ दंव
वूर्णयाद्वियाशियमका ॥ ॐ सिमर्वैवाववर्ण ॥ ॥ ॐ ह्रूं ह्रूं वं: स्व
: हुम्नंःस्वाहा ॥ दनयद्धुंसर्वा ॥ मार्थेवज्रा तुनीमवेल
यालकलाञ्स्यलिलनागयकचव्हनीश्रीलहूीमणीतुकूयानि:
याविसवंदिविविदिशांस्वसवमनुंणघृवाहूमितव्याठ ॥ ॥
ॐ कामंकामधुधधूहुमिनायवजूर्णायर्व । ॐ न्तुयाग्निया:
हूक्षंघकाद्याउंअंमंधीहः ॥ सवंवयूमनलावद्रुनीमंवि

ध्याय ॥ ॥ पुष्पं धूपं ॥ ॥ ॐ सप्तकोटिभुवनानि पूर्वद्वा०
॥ पूर्वाद्वारे नियुक्ताः ॥ ॥ ॥ नमस्तिमुद्रा हृदि प्रणाम ०॥ ॥
ॐ ह्रं वज्र ... श्रीदिव्यकायाय ... ॥ ॐ ह्रं ... नियु
क्तर्थ ॥ ॐ ... ॥ ... कान्तं
... ॥ श्रीदिव्यकायसुवर्णनिर्माणं ॥ यथा कनक निर्मल मणि
प्रभा ... ॥ समि ... कुल पूर्णं ... कर्मा लि
कां ॥ ... ॥ ... ॥ दक्षिणे चन्दन सिन्दू

नयकं ... पुष्प ... कालं ... ॥ धूपदीप ॥ ... गन्धादि
॥ ॥ पूजनं ॥ श्रीदिव्यकाय ... ॥ ... ॥ सर्वालंकारस
पूर्णं ... कान्तिमूर्तिकान्तिनि ॥ कुण्डलानि ... पु ...
गृह्णताम् ॥ यथा ... समाप्ति सर्वसाधक ॥ ...
... पुष्प ... गृह्णताम् ॥ आयुः श्रियश्च कल्याणं
पुत्र पौत्र धनानि ... सर्वकार्यार्थसि
द्धिर्दं ॥ ॥ ... ॥ ... ॥ ॐ ...

श्रीसिद्धलक्ष्मीविद्या ॥ आं क्रों ह्रीं हुं फट् ७ ॥ ॥ हूं श्रीकालकुमारि
अथ मन्त्रगर्भेश्वरी नेत्राय विलाहू नि संकल्प सिद्धि नमस्तु ॥ सकलविला
हू मिवारकुं ॥ उं हूं श्रीकवट श्रीकपाल खड्गहस्त भग
नेयाति ... सहद्धं श्री विलाहू नि र हया ७ ॥ सर्वकाल गङ्गु
लि ला हि दैवतार्थं विलाहू नि र हया ७ ॥ सिमिध्र मूल पाक्के
धूप पूजन स्व स्व देवत ना मेव ७ ॥ श्री काथेर दैवत स्यार्ण ७ ॥ प्र
ति द्वीपन वे ७ ॥ ॐ धूप धूर्द द्विपित्रा गणेश पूर्णं पूजना पका

वस्त्र विक्ति नावका ॐ अमृत ... ॐ श्री कुलमी स्वाहा ॥ विलाहू नि
पूजनं ॥ ॥ ॥ बलि अर्थां कर्म कारण ७ ॥ यथा विधानेन
॥ दिक्पाल विशोधनं ॥ त्रिविक्रमं ॥ ॥ ॥ अथा श्री किरीः
स्वाहा हु दि ॥ नाडा ... जनमानाव ... विलाहू नि इ ॥
हूया ७ ॥ धूप सांहिधान ॥ अथ अर्थ स्व स्व दैवत स्य लिङ्गा ह्रीं
नो ॥ दं श्री यत्रिय ... बलिं दद्या ७ ॥ ॥ श्री ...
नि १०८ ॥ ॐ ह्रीं श्री कि ॥ पूजनं ॥ ॥ पूजिताह विना १०८ ॥

पूजये ॥ ॥ अथ गणेशादिपूजाविधानं ॥ ॥ नमो श्रीदिशाम ॥

अथ श्राद्धमध्ये मूलं कलशं स्थापयेत् । कलशं कालमात्र

श्री सिद्धार्थं श्रावक्षिदिक ॥ अथ श्राद्धमध्ये सिद्धार्थ

पुष्पादनदच्छादनकाम्यतिलश्रीफल किंपलानि कलावदवीर

लडामधीपुष्ट्याहि तिरफला तिकल्वादिकमज ॥ पूयकं

पूजयकालेस्तूपूरवतीकतिलगकतिलणवापूष्पाजितयंरु

गुरुपूवन्दनकुंकुमस्कन्दमूलफलताम्बूलयकान्नदूर्वा

कलादुग्धमिश्रान्नामसत्० ॥ ॥ अथ श्रीदिवायपलदा ॥ ॥

पंचबलीदि ॥ अथ श्राद्धकलशलाजा । तिलसर्षपसवव । अनानि

यशीलश्रीदिवुर ध्नैकाकिकथीदिकं ॥ ॥ ताताव लिदव

नं ॥ ॐ गणनां त्वा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ॥ ॐ आ नो नियुद्भिः ॥ ॐ

धूरसि धूर्व ॥ ॐ उदुत्यं जातवेदसं ॥ ॐ भू देवानद्यौ विष्णुपत्नी लल

वैधीर्घ्रीसमिकलसमिपूलासमिकूलसमिपुक्रीबालि

कल्कसमिकूलसमितोमसर्वीर । भूमूजावाहनास्कन्ता

आयत्यामागधयुं श्लोकिनाव॰ क्रीयाभूशूद्राभ्राह्मणात्संप्र
आयत्याः ॥ ॐ विश्वम रुद्र ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ ॐ भूर्भुवः स्व
ता ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ॥ ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षि
णायै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वा
हा उदीच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऊर्ध्वायै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे
स्वाहा अवाच्यै दिशे स्वाहा ॥ इति दिग्वन्दनं ॥ ॥ ॐ ...
लोकपाल सहदेवता नैवेद्यं समर्पयामि ॥ ॐ ... ॥ ...

... ॥ अथ ब्रह्मयज्ञ ॥ ब्राह्मणादिभूतसंकल्प ॥ ॥ मध्या
ह्न्या विष्णुनदी यवलिकादाम ॥ ॐ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्र
पद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये । वागोजः सहौजो
मयि प्राणापानौ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य
मनसो वाति तृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु । शन्नो भवतु भुवनस्य
यस्पतिः ॥ २ ॥ गायत्री ॥ ३ ॥ ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदा
वृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥ ४ ॥ ॐ कस्त्वा सत्यो मदानां
ह

मं०। हे देवमन्नूदन्वसः। दृष्ट्वा विद्यानूजंवसः॥६॥ पृच्छी सूनःस
रवी नामत्रिकालज्ञानी। अनेन त्वां स्मिलिंहि॥७॥ कथ्यात्वन्न
दुःखानि पृष्टं धमेवूमत्त। कथ्या स्मारस्य वमूलम॥८॥ उं वंद्यांमि
ध्येयनाजन्ति। अन्नोस्मु हिंसदेसर्वतु वाटं॥९॥ अन्नोमि कुरुं
वनूहः अन्नोत्न वत्र सुंसाम। अन्न उं द्वावृहस्यामिः अन्नो मिक्षं
न्नूकमः॥१॥ अन्नो बान्नः यवकाः अन्नरूपगुरुस्त्रंप्तः। अन्न
ः कनिकदर्दवः पंक्तौ न्यांभू निवमंतुः॥१०॥ अन्नकानिसन्नवनू
नः सवंगौ शीघ्रमिडीजनां। अन्नवं वं द्वांपी लक्ष्मासतुवांमिः अन्न
उं द्वांत्रनूलायामहृद्या। अन्न उं द्वांपूमलीवाजूसाकी। अमि द्वार्ष
मानविनायेअनेआः॥११॥ अन्नोदंत्री॥ ध्यानापृथिवीना॥१२॥ पुम
कोकिहा॥१३॥ यांवः निवनभी॥१४॥ नस्मात् गमा॥१५॥ श्रीः
अनक्कि॥१६॥ इमं दुवे कुला मिनुस्यामाद्य द्र आसवांनि हृना
निसमी उल्का। मिनुस्याद्धेयद्रु आसवांनि हृना निसमी दुं
मिनुस्य द्रुआसमी ध्यामहे॥१७॥ इमं दुवे कुला आकं स दृश्मी

जीश्रासं ॥ ॐ नमस्ते कृतश्र रंणा । विद्यान नमस्ते पुरुष्यं छिमें । पुरुष्या
स्ते पुरुषत्वयन्नुदकाय ॥ यावतो पुरुषस्य अ निर्वाणवः ॥ २० ॥
नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे । नमस्ते भगवन्नस्तु य
तः स्वः समीहसे ॥ २१ ॥ अथो अवस्थितं समीद संसकां त्वौ पुरुषं कृतं
। शन्नः कुरु प्रजाभ्यो नयन्नः पशुभ्यः ॥ २२ ॥ भूमि विद्या नन्तप्र
य ॥ २३ ॥ नवदुर्दैवहितं पूर्वस्यां गन्त्र जन्मभु द्वसपाश्चात्यमशाव
दः शनं औ वसशनदः शनं शन्नूर्जमशनदः शनं । यवुव्रास

शनदः शनं सद्यी नास्यामशनदः शनं हृदयंशनदः शनं ॥ २४ ॥
पुरुषसूक्तप्रणवपूर्वक नि हृदयात् ॥ ॥ नवः ग्रासाग्निर्मुख
मं । आज्ञेन ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ इदं अग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा ॥ इदं वायवे ॥
ॐ स्वः स्वाहा ॥ इदं सूर्याय ॥ इदमग्नये न मम त्याग ॥ ॥ ॐ व
न्हौ पुरुषेव नूतनस्य मिथ्यश्रुवातुणं पूर्वं ॥ इदमग्नये न मम
त्याग ॥ ॥ अनुमादि ॥ ॐ याति निशौ पुरुषमनसं स्वाहा ॥ ॐ याति
नौ विश्वेदेवेदं सं स्वाहा ॥ ॐ अर्कं याति विनावसौ स्वाहा ॥ ॐ सर्व

यांहिंसीमकृमी स्वाहा ॥ ॐ सूनस्यः स्वाहा ॥ ॐ सूनाविनिर्कृतो
सि स्वाहा ॥ ॐ सूनाकृतं यदा कृतं तत्सर्वं किंयासम। सर्वं मद
पोकल्यानि विहीनं मियदा हिनः स्वाहा ॥ वह्निगायत्री ॥ ॐ भू
भूतनाय विद्महे भूतकाश्रिताय धीमहि। तन्नो वह्निः प्रचोदया
त्॥ ॥ ॐ देवकृतस्यैनसोवयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ मनुष्यकृ
तस्यै ॥ ॐ पितृकृतस्यै ॥ ॐ आत्मकृतस्यै ॥ ॐ एनसएनसोवय
जनमसि ०० ॥ ॐ यद्वो देवाश्चकृम जिह्वया गुरुकामयद्वाद विद्वांस्तत्यसर्वं

स्यैनसोवयजनमसि स्वाहा ॥ ॥ ॐ [illegible] पृथिव्यै महते:
स्वाहा ॥ ॐ भुवः अन्तरिक्षाय महते स्वाहा ॥ ॐ स्वः सू
र्याय दिवे महते स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो
दिग्भ्यः प्रजापतये महते स्वाहा ॥ ॐ भूपतये भुवनपतये [illegible]
[illegible] स्वाहा ॥ ॐ [illegible] नारायणाय स्वा
हा ॥ ॐ विष्णु [illegible] स्वा
हा ॥ ॐ [illegible] नाय



सायस्वाहा॥ॐ नमः क्षीरवर्णसुधाब्धिमधुदेवतासमानायस्वाहा॥ॐ भू
र्भुवःस्वः कनिष्ठाय नमः ऊर्ध्वमुखाय विश्वेवनायस्वाहा॥ ॥
गुरुपूजा॥ ॥भूमनकं निर्वर्णस्वपूजनम्‌ ॐ नमो
पूजन्नः वाज्ञेवं दसस्वाहा॥ मकरं निर्वर्णस्वाहा पुष्पमस्वधात्र
या विश्वमय न्यासं विश्वमस्यास्विस्वाहा॥ ॥ॐ स्वक्लिन ॐ स्वे मि
ष॥ ॥दलिक्षनं॥ ॐ द्वयीसमसस्यास्विस्वपञ्चक्लिनं लवं
॥देवीदेवताह्यमगन्धर्वानिर्मलनं॥ ॥बालमधिवः

किणास्वानं॥ ॥संध्यावन्दनमासनं॥ ॥पवित्रधारणं॥ पृथ्वी
मलिमर्दन्नानं॥ ॐ पृथ्विविजानपृथगवामधवनःसन्नु। पृथ्वि
या न्नु स्मिसन्नुयास्मां ह्वं हृदयं धियं हितः॥ ॥पृष्ठ॥ पुष्पमन्नु
पञ्चविक्षा ॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ ॥
॥ ॥बीजमन्त्रं विन्यासं॥ ॥अंगन्यासं करन्यासं काली हृदी
॥ ॥आवाहनं जोकाली हृदा॥ ॐ यजमानस्य यथाकामं

संयू ल्तुं दू त्रिस्सू कु लमसु ॥ ॐ देवागा ॥ तु वियाग ॥ तुं विन्द्याग ॥ तु मि
स२ नः मन्त्रु रौक दे मन्त्रं वज्र ह्रूं स्वाहा ॥ वा भौ भा स्वाहा ॥ ॐ भ्रू श्राज
स्व स्व भं तु भं विन्दुनः सामवृ स्त्री । लवावाग्यस्य सीगरथ । स्वक्त यया
तु त्रिसम्पूयत्तु याजा सेवृ स्त्रान्य हिमा विमादु ॥ भ्रू प्याय मानोस्
मृतायसी भा दि ब विश्व याव स्यूलमा निधि ह्र । भ्रू प्याय सोमटिक्
मः सखावृध ॥ भ्रू भंव स्नोमगनोयमत्वानमा । शिस्मभस्क ७ ॥ भ्रू
न्य थं वीकामया गिरा । तुरयन्कौ गिवस्कम विश्वाः स्त्रू खिवयः श्रू

थक । भूर न्न कामा गुरा गिय ॥ भूम्नि ष्टिय मू भा मस्न कामाव्हु मस्य
कथ्रुं स्य सं सा तु का विनाउ मि ॥ ॐ भयः पृ थिव्या ॥ ॐ दक्स्यत्व
॥ ॐ कूल्लिना हृ भजानू नाउ सं वुक्क वज्र साया हि गिवृम मिस
स्व सीन नक्र भजन वी ध्याया हि गि वृम मिन्दु स्त्री सिंयनवला जा
शीयसम सं हि विवृम मि ॥ ॐ दूमदादिवमू वृम ॥ ॐ ड द्रयमिमु
स ॥ ॐ श्री ध्रीम ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे नमस्त्वमग्नये नमः पृथिव्यै
नमः ओषधीभ्यः नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे महते

कथामि ॥ ॐ हूं त्रिलुस्यसामस्य देवानावद्व विद्याय: ॥ कत्रियु
कं यसा मिकत्रिह्या मिठ्ठनन्द्रन: ॥ यदेवासी हिद्याकादनास्कपु
चिह्याम ह्याकादनास्क ॥ ॐ पू सि ह्विनाम हिनकादनास्कनाद
वासायक्ष मिनंदा मं ॥ ॐ पूनस्वा दियानु दावसव: सामि:
धोमी पूनवक्ष रनावस्नी थयक्ष: ॥ पुमनस्क भौवईयस्वनया
: सयानुभ्र ग्रमानस्यकामा: ॥ ॐ प्रावुकनवाक्ष ॥ ब्रुथमा हिमी
ही हिमी हूमी ऐं हूं आसत्तनसलंभक्षनयक्ष यहू हियहू: ॥ मि:

सामहि: सामान्नू हि धपूनानवाक्ष्यं पूरानूवा कुंयाउ हियाउं
हिर्दं मक्षा भैरवयक्षानाद्व मि हिनाद्व हियो आमकामा सेमर्दं भनुर्द:
स्वाहा ॥ ॥ ॐ हिमस्वा स्वाउलानूना ॥ ल्याग्नि ह्या याम सि ॥ ॐ म
द्रवी हिनानुयानि ई भ्रा उ हं भाउं ॥ श्रीमद्रुद्रा हिनाउ वाग्नि ईं भाउ
हं यक्षं ॥ ॐ क्रिकादग्नि जनयं श्रीद्वादनिगुवानमव ॥ ॐ ता नायक्ष
पूतां गुह्य दयमभद्रूयवं ॥ विधूलीवनं वह्नाकाम ठेनेताकवं दय्वा
मयं ॥ साक्षी नक्षपूतां ठनानमूही मत्र ॥ विंभकालौ हिकणीव

हृत्कमलं अङ्गुनमास्तु नं ॥ ॥ श्रीविष्णो महिन ... ना स्वागतस्यमय
थाथ । ओं ... अनुवं ... नमामि ... ॥ ... मोसि ... याम
... हं तं ... । कपिलतोटि सर्ज्ञ ... कवा ... पैवर्त । व
... व ... निमम ... नकासि । यावद्धा ... पासि ॥ याव
... माः । यावद्धाव ... निवाव ... यासद्रु । यत्र तं
... माठ्माना नजीवति । यत्र ... यकाना ... जीव
जिताजीवति । एकस्थ ... नन्दं ... अपूलना । यूपि

वीतं तुभी मानेन ... शब्दं तेन ॥ ओं ... स्वागतं ॥ ओं
सन्नि हितकार ... समा ... सर्व ... सिः ... सि ... हिंः स
मि ... नमकां ... स्वाहा ॥ ॥
... कु ... कु ... कु ... पूजा
स्वाहा ॥ ओं ... ॥ ॥ ... ॥ ...
१०० ॥ ओं मन्त्रार्थः सन्तु कलश ... स्थानाना ... वकाः
सर्वीकाव नन्दा हवन्तु । ... ॥ नाग

धर्म्मावृद्धिर्भवतु । अमुकनाम्नः स्वजनसिद्धिरस्तु पुत्राय वृद्धिरस्तु
॥ पुत्रांसु रविनः स्तु ॥ ॐ शं शः शुभं भवत्वास्तु ॥ कुरुष्व यजमाना
णां भगवतस्य निर्वाणं गमायुनावा शुभं मे श्रीजिन धनलक्ष्मी
कनिसका नववृद्धिरस्तु ॥ द्विपदचतुष्पदस्य शुभं भवतु ॥ सर्व्व
सत्त्वानां स्वस्ति नः स्तु ॥ यत्र्चैत्यं कालवर्मी भवतु । सर्व विधि
यत्रिपूर्णमस्तु ॥ ॥ ॥ जापमङ्गलस्तोत्र ॥ ॐ नमः स्वयं
॥ कृत्स्नवीर्यस्य पादाय यत्र जनमदसाम वेदा ३ धर्म्मस्कं धको

श्रीवीरं द्वितीयं प्रणम्य पदवदनं ध्याहं मंगलधामं । मध्यस्थीयस्थाना
र्ह नयननमूर्तिनिरूढ़ो कसरं श्रीवर्द्धमा निरूपकत्वमूर्तिस्थवपु
र्नवदननयकृतपीविनाह ॥ १ ॥ नकारो रूक्मनिकृत्स्नं शियद्गनिय
कास्त्री निर्दग्धापि मातृ. श्रीसुखायधलक्षादिवुधपद्गमास्त्री
निवर्णी ध्वनि मिद्धा । नाम ध्यावाये वृद्धा मतु विलक्ष्मकवी निकालय
वीर्यां वर्यामासून कृजय नुत नमद्यानिलसूर्या निर्वाण ॥ २ ॥
यथय सूर्य स्थि दिनि विदि मिनिवासं स्थिताये वक्ताया. कृते

यावद्भिमेरुष्कलानयत्रिगकामहुलस्फुल्लिलेवा । मसर्वसस्तुदं
वाफुल्लिसमरसलदामस्तुसन्तौमनूया । सूदामस्का विहीनायाउ
नयत्रिविधिनिश्चीनदामाकमस्व ॥ ३ ॥ यक्षेच्छाखेचरत्वेसनि
द्धिगुटिकापादुकादृश्यनत्वं पाताले दिव्यसिद्धिः त्रिभुवनस
द्विनादिव्यभूतिर्नृकामसिद्धिः । सिद्धिर्दिव्यौषधीनां धनयुवतिसु
ना भिभवद्भक्तिभाजः श्रीमद्वाग्देवसादात्सकलवपुवनतामणिः
दैवपसन्नः ॥ ४ ॥ ॐ नवाङ्गालोकपालाः स्वस्वदिदिनिवसिताः

स्वस्वमूहास्वयूका । व्याहिशक्तिद्यनंशावसमिनुविसवाउन्मादै
वास्वयूकाः यक्षाआगमाः स्वर्गनिश्रीमणभुस्वदूकः स्फुल्लिलमा
लकाश्च । सिद्धिप्रयावद्वानुलक्षकुवस्तमकायनृत्पगुणसुलेस्तु ।
२ ॥ यावद्वीपीनवभेवह निसूननदीआकृ नीपून्यभीया । याव
द्वाकानसारर्नेगगनागणेयसिहन्तयमिसिद्धिगतानि । यावद्दुकामि
नाक्रीकृमिविमलजलयेद सिद्धान्तवाणी । तावत्त्वंपूतगीतासुः
उनयाभिवृन्तावर्द्धमन्त्राफलश्री ॥ ५ ॥ अथवाचकनाम । गद्गद

सकलाहतरत्नः॥ यिशा॥ त्रा. अवमोधवमासास्किभिणणसक
ला. अवनत्क तृष्णाभः॥ अलप्रकर्तृवलाभूकवटयसावर्तु
स्तणीवत्वन्त्वाः॥ स्तूत्रीवं सत्तु निर्बानिर्मूजस्तुरवपट संतुवंवाजे
लक्षी॥ ७ ॥ व्रक्ष धिक्ष ध्वर्णकंहलनयमवलडक्ः॥ प्राणीसमी
नः॥ श्रीयक्षणीनकृष्णरीकृणणवस्तृ हिः॥ संयुक्ताः॥ सर्वनागाः॥ प्रक
नस्माधिशे ह्रिवीगाद्गुनिवालयहनावंरदुस्स्पर्शोदिदेवा. योगि
न्योयाश्रमानाः॥ स्तूयवनननिताः॥ यांतुवसर्वदेवाः॥ ८ ॥

ॐकारं बृहत्मूलं कुसमणदकप्रिमं क्रुद्ध विस्तीर्णु शारवा स्तु॥
ष्यार्वंसामगूर्च्यायज्ञगाविलवरुतगन्धपर्वदेव्हर्क॥ याम
[illegible]यास्तुशीर्ष्कुसनाकवपट्टनीयवोयस्यानिर्गि. भावस्तुक
ल्पवृक्षः॥ श्रीयिगणसूनितिः॥ यांतुधावदवृक्षः॥ ९ ॥ कल्याणं
नानसिंहप्रकटितनमूर्खनकानगाधश्रीस्तु. स्कोश्रीहिः॥ प्रज्वाल
नंहुतवहसदृशं हुं त्रिपिप्रीकंस्तगर्द्धिः॥ निर्हिन्नोयस्तुमात
मदनोजगलिवदानवन्दाहिनस्याः॥ सायंयांतुस्वयंवैय

ति तुवस्मर सिंहस्य गणविक्रमः ॥ १० ॥ यीतं यस्याधरित्रीऊंल
मवकलमीलिंगमाकारसूर्यं नक्षत्रपुष्पमालीपञ्चगणकुसुमं
नदयस्तुर्कीव ह्निः कृकीसप्तसमुद्रागुजगिरिमिस्वमाः सप्तः
पातालपादी वेदाश्चत्वारिवाग्वदनंदिशवदनयाकु बोधि
ध्यालिंगः ॥ ११ ॥ ध्यानमाद्दुकीनायूतम पियपर्दैयल्लावैः कृसू
सूर्हिंः रक्षमकोर्ने सोर्यभाग्रैः कृसुमरक्तलसुगं भीमधीवीहि
नही ःध्रीपैः स्तूपाद्माद्भमलयनसूनसीदं हिसिन्दूर्तैवी पृ

थ्वीनं वधाधूपैः स्वकृलेऊविभिकनवमक्रु स्वैपूर्णं ॥ १२ ॥ अथ
ध्येयस्तुतिलिखा ॥ नानाजातिरमोक्षसवलिसानुलानिवनानाऊणं ॥
सूर्याहि ॥ नालओंलक्ष्मुनिध्याय ॥ ॐ सू प्रवक्ता ॥ सूकल क्षी ॥ आ
मायधासनस्था ॥ ॥ तमालामुविरमेमवनसुति ॥ तंयक्षलानित्रु
तुसू हि सू तुहिस्वाभानिवासितं । सूहिकर्ण्णसमकानित्यं नमो बुद्ध
स्वमास्तुमं ॥ ॥ नमस्कंदवदैवमे रमामयैनाहर्वीनित्री । सर्व्वय
वितुकृदूर्वं वेपध्वंगयुक्कस्थाने ॥ ॥ यक्षलीयक्षनागगन्धः

श्रीलक्ष्मीगणेशवंदना । स्वामिनाथि यमस्कंधो . भगवानेभवतीनमः ॥
॥ नाम ॥ नागयाणी स्मको नित्यं . जलगाओमहावनः । निसप्तप्रिव
विरक्षाल नागमाऊयशवनमः ॥ ॥ १ ॥ नमस्त्रलनद्धाओं . विश्व
मित्रायमदग्निः । वशिष्ठकाश्यपात्रिश्च . नक्षीनसासुभाम्यैवं ॥ ॥
॥ [illegible] ॥ सनकः सनत्कुमारश्च सनकादिकनाचिदि घे स्वाधारा याच्या
ज्ञानः पाश्रियालयेन्नु वसूर्धं धर्मस्थितमाः सर्वदा । कालस्थक्षमित्र
मिशिलाऊलमूत्रः सनत्कुमाः पूज्ञया ओटर् [illegible] स्कं धनवृद्धिमान्ध
वमूलू ७ । श्री स्त्री प्रसादाः सदा ॥ जिन्हदोमान्यवनवनणी कुंभ्म
कां विन्दुयाना ७ लागा शुद्धिलि खिनयानिनलू फयग्रकन्तु स्तु । माता
हीनंयदिक्रयादि नंयपुसारे ठिनक्रू . भव सेर्दुं वात्वत्निसया
स्कातुमन स्केसधुं ॥ ॥ [illegible] यां . अन्मयासा हिर्वा
कवीं । सकन्तुमर्द सिरटवंश . कमायूर्न्यो कवीतिरी ॥ पु तमस्तु सचति
गताया नाक्षित्तकनू णीहनगणीः । दोसाओ पयांश । कि सर्वसमक्त्वी न्तु
हवन्तु लोका ॥ स्त्रीगणि सर्वस्तुनानां . संस्थिमादेवनाद्यत्र । पुल्क

ग्रंथनकृतानां दृष्टुद्रंयत्रमंत्रवः ॥ कर्म्मणामत्रसावाचा । हस्ता
नान्यागनिर्म्मस ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यत्कृतं ॥ अ
यत्कामास्त्रनाहीनं । कृतांद्विश्यस्माशमव । पूर्णमस्तु वाक्य दीनस्य :
तस्मै भवद्भागवत ॥ अथ आवाहनादि ॥ कुशलाद्योदि ॥ ॥ मन्त्र
कलशस्य निर्मलीकरणं ॥ श्रीमातृगणविसर्ज्जनं ॥ यजमान तिला
किकलशम्भ श्रीखण्डं ॥ ॐ नमः शम्भवा ॥ ॐ ह्रः ह्रीं विघ्न ॥ ॐ भू जि
घ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विषव ॥ ॥ वज्राचार्यपानद्रलासा ॥ ॐ वज्र य

क्षायं ॥ ॥ ॐ उत्तिष्ठत्वं वज्रगणस्यपतेदवसर्वदुष्टमदु । ह्रुयस्य
तुम्मन्तः स्थानं ॥ ॐ हुं यात्यं हिवावस्वा ॥ वज्रविसर्ज्जनं ॥ ॥
ॐ ह्रः ह्रीं विघ्न ॥ पुनीतविसर्ज्जनं ॥ ॐ कृतोवः सर्व्वसत्वार्थ
ति मृष्टि कतोसि ॥ विसृष्टि सिद्धिः सत्वा विसृष्टि सि ॥ भोमायत्रकसा
स्वाहा सि ॥ ... गन्धादिसाग ॥ त्रिभाय ॥ ॥
वज्रदृगम्भायनं ॥ ॐ स्रू मिमियान ॥ वज्राकृशेनषणीभावकं
नालिसर्वं ॥ ॥ वज्रगणसंध्यवयोसामभद्रकर्मं ॥ ॐ कृतायकर्म्म

२णे स्वाहा ॥ ॐ अरुकुमाय कर्म्मणे स्वाहा ॥ पुनीकाकुलामिधं न हुत्या ०
॥ ॐ आनन्दाय स्वाहा ॥ ॥ ॐ मनु मा गोमिनं त्वंमे याहि कृपा यूर्द्ध
वृसिका मा मृत्वे दिवस्त्री वाकृपा सिद्धा मेयाहि । कृपा गुणे मनवो
त्रुव तनु तकृपा पूर्णमे धा मोदहि सविता कृपा दधातु मे धामे देवी सुपः
स्वली कृपा दधातु मे मनसि श्रिनीवा वामली यु कृपा सुरा विद्यंगा । निव
मकृपा द्यायन वा कृपा न ध्रुवरे गोत्रयु गोविनां ॥ ॐ त्र्यायुषं जाम
दग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो कृपा स्तु त्र्यायुषं ॥

॥ ॐ गन्धस्य मनाललाट ग्रीवायां दक्षिणबाहु मूल हृदि मे तिलकं
कारयेत् ० ॥ ॥ कलश माहि विसर्जनं ॥ ॐ इदं हृदयं मम त्वं ॥ गणक
लगगणा किसमसर्जनं ॥ ॥ पुनि मम स्वानं ॥ ॐ नमस्तु गायाः
वृणी मन्त्र गणनु यज्ञा य गणनु यज्ञ गण टदेवी स्किमानू भयः ।
गुरुर्दं [illegible] क्रियमाणमतीगन्नो स्तु द्विजदेसमुत्युव्यदं ॥ ॥ यज्ञ
यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ॥ एष ते यज्ञो यज्ञ
पते सह सूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥ यज्ञ विसर्जनं ॥

आसनं कृत्वा ॥ अथ शीबा ॥ आसनासीनं कृत्वा ॥ मूलः गोमुखां सं ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अथ नामा ॥ प्रयस्नातः ॥ मूलहितवचं २ ॥ ॐ गच्छ
गच्छ स्व न श्रेष्ठ. आस्मास मीनवाकुनः । यत्र ब्रह्मा ■ लयादेवीः
तत्र गच्छ हुताशनः ॥ ॥ ...काताप्रिकृ...भ्यां (श्रीम
स्वीकृत्वा ॥ ॥ ...साक्षि ॥ ॥ ...स्य २ ॥ ॥ ...नं ॥
॥ २ ॥ ७ ॥ शुभम् ॥ ७ ॥ ७ ॥ ॐ सिकाला...काय पूर्णी
श्रीविवाहपद्धति समाप्त ॥ ॥ ॥ शुभमस्तु सर्वदा ॥

१ संवत् १९१७ फाल्गुणवदि २ स्वहस्तेन लिख्यतं आविप्र श्री[redacted]
[redacted] ॥ ॥ [redacted]
तमनकशावीयापुरी ॥ ५
१ अथान्नु ॥ यजुर्वेदचतुर्वर्षेस्मिन् फाल्गुणे सितपक्षके । लि
लिखितं पुस्तकं कर्मा. विवाहार्थं गणेशं मुदा ॥ ७ १ ॥

१ मिमाला वायराल विनकया
क॥ आवुयाः श्रीयिपूकन, मेजु
वंथं कुनियति, यावुसलाकप
थीन्नं, नावकालहि नारव॥
छपनिक्षसलिनकेजादावा
वहाता विद्वाया, थ्यथदम
दिदसावमनव, तिनेमाल,
वब्रुसूयिदनलहिनरु यमा
न, ऋर्थक्वा नालसु मन
रुयनेकर्स॥ नक्षसनेवा
वे ताताधायक, ल्मय अह
नं थरुनयावक, छग्व छुरव
वा वताना विदकूकयान
विरकं, दहिछमविथक॥

१ श्रुथकुलविकाकाकिनिः॥ ॥
ममलनीक्वूना, हूँनाजथू
जा॥ थंकाक्रियोअवीटकया
आ॥ क्रियंल्याअमथूजायाद
कोयमाल॥ ॥ श्रुथकुलनक
हूँ अथायकयाअमाल॥ आ
या खोना हूँसनकसयाजक॥
श्रीमलाउ मनसुनालनिः
मजुनजाञ॥ थशांमसदाः
अकनामयाहीमं॥ हूँमान्हु
हूँमावमाहायो, हूँ नातया,
लाहीमा, लाहीया, हूहूल
का, लाउऊँलासरसौं, पू
जायाया॥ कालिमानजा॥
॥ ॥ [redacted] नसुन

नमवृन्दका॰ दुन्दुभीनाग॰ ध
रकनागमुद्रां ॥ अञ्जलायन ॥
मुद्राणां ॥ वाद्य ॥ ॐ यज
मानस्यकं स्वास्थ्य अनुक्रमा:
गविवाहोद्दे॰ नमनुकूला
गमन्तुनवाद्य ॥ [illegible]
विधिः ॐ कं मुला धूपायाय
॥ धूपदीप स्नोक्ताय पर्श्वी
न्के धूनकं ॥ [redacted]
[redacted] ॥ ॥
कूमनाविलकनयात्रं पूजा
[illegible] कुयानविय ॥ [illegible]
निष्ठिवकाती: [illegible]
[illegible] दक्षिणानस्यै ॥ निम
न्तुलक्षाय ॥ ॥ [illegible]

[illegible] गीदि पूजनं ॥ ॐ टमासन
हकार्य॰ वत्तन॰ अक्षीयवीनधू
पदीप ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ नाक्षिक॰ लीक्षिकविय
॥ [illegible] ॥ दक्षि
मी [illegible] थकाक्षिनी स्थलंवभः
नथस्य [illegible] काव [illegible] कसमान
॥ पूर्वसास्यां ॥ [illegible] ॥
निर्मी [illegible] ॥ पूर्णया [illegible]
खनहाय ॥ [illegible]
स्नानकनकं ॥ ॐ टमासन॰ व
त्तनयक्षीयवीनधूपधूपदीप
ॐ [illegible] नि ॥ मनुलयास्नान
नकृपकं ॥ मनरुनाक [illegible]
ननहाय ॥ नमवृन्दकावायकुं
१०८ ॥ [illegible] ॥ दक्षि

माया मासलाहा मिस अमनख
ङ्कि कयोस्यं भकयु टेका भानकं
मं ॥ चकभाकु भाटि डुङ्कि भानिय
कं ॥ बाजनकाय ॥ माजनलं च
बमुर्ध गा तुयालं खबजन ॥ मु लि
मक विज ॥ बन्चन सि न्दुन सनु
णा नी वीदाकं ॥ सङ्कुमाति
तुविक्व ॥ मास धाति याचकाज
ला साला व कु विनं कलस ख्विङ्कि
क सभान ॥ कीमानीया समय
अयनधियकं ॥ थ१थ नि नन:
बुन्दकाभा ट मं ॥ ङ्कि यकं विय
॥ २ धघाव ॥ भालु ॥ वि ॥ बाकु
हुगुलि ॥ मयनखालो ॥ खुगाय
ख्वल ॥ द ॥ २ भाव ॥ मवा ॥ भाङ्क
न ॥ कमलामवायकं ॥ भाखल

योम्हं ॥ दुङ्किम्यं मं ॥ गणगुरुना
ग ॥ ओ घु का कोस्य कु ङ्कामया:
कं ॥ २ हिमाखा प्मा ढिमंदु सन:
जानकं ॥ धकं दुं सनकं दुया ॥

जुयसीति कं दुया ॥ ढिढिनिन
घाविलयकं ॥ कोमनसमायकं
१ं नाय ॥ जु लिनी ॥ ठलि लिका
अकल काय ॥ धस्वमा मूलघा
गसलस्वस्यं दुकाय ॥ जुनि कु:
णुटनकं ॥ बुङ्का पु ट कलसं
यङ्कयकंणी ॥ शीलङ्की नाम यां
जुलिनि ॥ गण ॥ बलि २ गा ना सदुं
स्वाधिं स्वासनु णा ढि वाय ॥ थंकू
ढिनयवाटक याव ॥ नुवाखु
ल वाथनं ॥ उक्काङ्किनयाव ॥ धू

दीपज्ञायस्वात ॥ ॐ वनन्यादि
॥ वस्त्र दिव्याय ॥ थँकादिस्यँम
नकुमाजुयासंनु ननस्वाय, लि
मिजास पूजाकं १ स्वासमास, दुदु
कोलयके, कण्डिलानस्यँ, पूजा
हिनन, लिमिनस्वाय, मास्का
यकुगन, सुर्थयोतलछननसाय
॥ चन्दनसिन्दूरसनुगस्वानसँ
वस्त्रास ॥ सुलिनीनस्वाय ॥ सरु
स्नानकितुकिया ॥ जिगवनं १
दक्षिणा, धलवस्त्रापुजाफोगी
स्यँ स्थन ॥ कलगथव २ थास
काय ॥ पूर्वस, गीवस, दक्षि
गपूजुनीक, यश्चिमस्वाज, उत
तकलस, पूर्वगस्व, उर्द्धस्वस,
वस्त्रासजवसेका, स्ववसवास
न, नागस्व, अक्षयकनी, थासे

ॐ विष्णुस्यँमजके ॥ धलस्यँथ
गविधि ॥ ॥ ॥ ॥
अर्घिमायाथँकादिनीस्यँलासा:
यावनाकानलखभवथस्यँ, अ
केसंनु यजायके लिसहागा:
यास्ववस, स्वक्रिकसवं सावु
केकँ ॥ निर्माल्कन, वलि, सूर्य
गोतलमनकाय, वस्त्रासके:
मनके ॥ ॐ दमासन, सूर्यच
न्दनसिन्दूरयक्षयवीनपूजा
धूपदीप ॥ ॐ टरुलीमि ॥ स
गुलक्षोत ॥ ॐ यक्षयामि ॥ सू
तगन्यादि ॥ अर्घिमायासनकु
माजुयासनुगनस्वाय ॥ चन्द्र
मण्डलगनस्वाय ॥ मोक्षायचे
कनकोलनकेगत ॥ ललाट:

हृदिह स्तोत्रानी याटी· आन· हृ
न थं· को· आन हृनौं ॥२॥ ॐ क्राभ
क्रो ध्यास्तु भाक क्रिय पूमस्य त्रिव
था नो दूहे ग्र न पुसहस्र दन्मः
नय ॥ श्रीनीय ॥ ॐ श्रीसीय स्वा
॥ कूर्चाया तनन कानहाय ॥ ॐ कव
स्याहा ॥ वन्दन सिन्दूनस्मृनीः
श्रीहृदि ॥ सत्पूनाविय नम्हा ॥
मास घोतआवक ॥ ॐ सत्याम्नः
भिसस्वा निवयसन्नू ध्या नैमीस
नरीसू लिह्वी जिन ॐ वहृ स्तुभि
ॐ अव जिनअ विष्टी सन्मम नः
भिवसंकल्पमस्तु ॥ लासालाय
हावस्कविनक्ष वीयक ॥ नडपू
जाया ॥ वन्दन सिंदूनयक्षायवी
नयूक्ष ॥ पूनमन्वादि ॥ वन्दु
ककेर

मनुलमीसस्कलनमस्यैदह्निः
धासहृक्षाय ॥ लूसिया वर्क ॥
मावहृ यक ॥ धूप भसआवि
॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नक्रिमाम अंतार्किंत्रैनीलास
लावयकावैसाजक स्वक्रिक:
सहृन ॥ निर्मलकवलि ॥ कूर्प
मानुलमनहाय ॥ हनोढ वृक्ष
सकननैक ॥ ॐ वमासनादियु
ईव७ ॥ धूपदीयाक ॥ ॐवं ॐ
लेलि ॥ मनुलस्मान ॥ भूतपन्वि
दि ॥ मवरुनातवानस्वाय ॥ स
गुणसमया सिन्दूनसानयगुः
सेलंदयत्रिम धूलटक्षास्यंम
याव मनुणनस्वाय ॥ सिन्दूनया
नलदि विय ॥ सिंदूनसानयंको भि

नसयक्षं ॥ अक्षिमाक्षित्र ॥ सिंध्र
मूढनस्वाय्यां वक्षादिसमनं
ज्ञागनव ॥ थंकाद्वि स्वाक्ष्णाद्वि
नत्रके ॥ सिंध्रस्वायन वैलान:
॥ ॐ सिन्दूरा नादनसमूर्हमम्
॥ ॐ त्रैयैविद्गृवा ॥ सिंध्रकाय
सिंध्रमूर्कजाय ॥ प्रसादलिनि
नीसलावसकौशमलम्रियाव
धाल. रुलिनी. शनवृन्दका:
कायलनलि. धत्नस्थंस्वाय
॥ रुलिनीस्वाय ॥ ॐ प्रावानमि
न्दु ॥ शवृन्दकानकोमायकं ॥
ॐ प्रमकाकं ॥ जूलिनीनस्वाय
॥ ॐ नमःशम्हवा ॥ प्रसादलि
निनीनस्वा[illegible]नादविज ॥
ॐ प्रजायमान ॥ कामावन

यक्ष ॥ ॐ नवक्षायू ॥ सूर्यकोव
लंकनकाय ॥ ॐ दैवस्यस्वा ॥ लूं
धंनवनसंत्रके ॥ ॐ क्लिनश्रुगाई
॥ सन्धनसिन्दूर. सगुणसमान
प्रिय ॥ वंदा मनकुजजाकव
॥ ब्राह्मणादिपूजा ॥ वक्रिणाद
नं ॥ अग्नीचंद ॥ एकिमावाग
थंकाद्विवक्रहामयानपूज्याल
जनप्रियकंवाधू ॥ एकिमाया
सरुभागमित्रमिस्वा ॥ मासधं
उयावकलमधावधस्थलास्व
लावश्रन ॥ नलसरुविनवर्य
वरुलिनीवत्रिनकं ॥ भूमन:
मालकोनवाय ॥ वयकलंक:
स्वाज ॥ सगुणमित्राक्षणयाव
॥ ॐ निरुलिनी स्वाजविभिदर्यं

॥ ॥ नमो अमयनवसिद्धि
मनोयश्रिध्यु अथ सिद्धिनायुकं
लिङ्गसं कामरूप ॥ अथ २ सिद्धि
मनुणकल ॥ ध्वंन ॥ नमोवुद्ध
ध्वंन ॥ ॐ वज्र ज्ञजायनिमूर्ति
अनुस्कलश्यः गणपत्याः
द्विसौगुह्याः सर्वसिद्धानमः ॐ
द्वमासनं २ पूर्वं २ ॥ नमोवुद्ध
ध्वंन ॥ ॐ मत्वामामीमि ॥ २८ ॥
॥ ॥ भूमगादि ॥ ८ ॥ ॐ वज्र
२ ॥ ॐ अष्टासनायर ॥ ॐ ह्रीं
सासनायर ॥ ॥ स्वा ॥ ॐ
गीर्गीचीनं ॥ ॐ वज्र २ धानयु
यंर ॥ ध्यायानुलि ॥ ३ ॥ वज्र ॥
ॐ वज्रयक्षानं ॥ ॐ वजायन ॥
ॐ वज्र णस्वाम ॥ ॐ भूत्वज्रन
॥ ॥ ॐ वज्रकालनाध्वंन ॥

ॐ धमादिर ॥ क्लामायाकूनी
श्रीसत्वगायवाय ॥ ॥ ॐ वि
वज्रमकाकलाध्वंन ॥ ॥ नमो
सर्वपूजा ॥ ॐ वाज्रनमः ॥
८ ॥ ॐ द्वसिकाया ॥ ॐ दीर्घायु
त्वा ॥ ॐ आः ऊ स्मिनी ॥ ॐ भूर्य
देवानिमद्ग सर्वधर्मावसनि
कुमाः ॥ मकाजं ॐ किला
मथयस्सनवथ मीत्रूमं ॥ ॐ व
यव ॥ ॐ मिमनुणपूजा ॥ ॥
नमोवज्रकायाध्वंन ॥ ॐ गणाना
त्वा ॥ ॐ मनामनर्थ्ययत ॥ ॐ न
मणगत्याध्वंनं ॥ ॥ नमोस्तिय
स ॥ ॐ भूर्यालोः ॥ ॐ भूर्दिमि
श्री ॥ ॐ नमस्कायास ॥ ॥ नमो
श्रीमायाध्वंन ॥ ॐ अगवाणाः ॥ ॐ
अमवमिकं ॥ ॐ कीमायाँ ॥

ष्टिनं॥ ॥...नी॥ॐ नमः शम्
वा॥ ॥अजा॥ॐ ...स्वा॥ ॥
अक्रानी॥ॐ ...॥ ॥...
ॐ श्री श्रीमं॥ ॥...॥ॐ ...
नः॥ ॥वर्द्धि...॥ॐ ...
नश्चकू॥ ॥...॥ॐ ...॥
१०॥ ॥...काल॥ॐ ...
नाम मित्र॥१०॥ ॥...लोक
पाल॥ॐ गणेशाय नमः॥१॥ ॥
...॥ॐ सर्वात्मा॥६॥
॥ ॥मासादि॥ॐ ...मासा॥
...न॥ॐ समिम७॥ ...
द॥ॐ श्री श्रीमं॥ वस्तुः स्वस्ति॥ॐ
धूपासि॥धूप॥ॐ ...॥...
अ॥ॐ याः ...लिनी॥...॥ॐ
...॥...॥ॐ मेनाहू
नि॥ ॥...॥ॐ नमोव

...॥ॐ ...सर्व...निर्जल
...श्री...
माज, श्री...ग्रहः
...
कं। ...
...
...सक
ल...मूर्ति॥मू
...॥ ॥...
मात्र॥ ॥ ॥...
साधनं॥...नाम॥ॐ श्री
...कायस्वाहा॥...नि॥
मिलाड्...नि॥...
न॥ मिलाड्...॥ ॥ ॥
...७॥...
...
॥...लाल...नमः. निवद्धं

ताल याव पूजा याय ॥ यन्त्र नाथि
पुयदी याङ्के ॥ ॐ हूँ हूं लं सिं ॥ हेलो
॥ ॐ नमः निद्राय ॥ पूजन न्धी
धि ॥ धाम्रपत्र पादु निद्रिय ॥
ॐ नमः ॥ मूत्रा ॥ ॐ कामश्री ठः
लम्बाय ॥ ॐ समसतानु ब्रि श्वदं
याः समा याहृ दया निनी । सम्बा
नन्दिश्चसं धमासमृ दु ही द
वाद्मनी ०० ॥ लाय ॥ लं नकमन
॥ यज्ञमनुपस्थालय ॥ ॐ स्वः
नुकुमानाय ॐ दमासनं २ ॥ ध
यं २ ॥ एवं याव धूपादि धूपयी
याङ्के ॥ पूजन आदि ॥ ॥ ॥
नवपुकुमानायकु । द्वयान्त्वया
७ ॥ ॐ कुमार्ग स्वर्ल्नृ यग. मम
यामक नीननं । द्विवाद लदः
लिव. भक्तिनृ कुम्भ स्मिका ॥
मयादला मृयं ज्ञानि: कन्यानु

राजमानाश्री स्तुतिक
मानाक्षन

वेगुना स्तिलाः ॥ कमलोपदलं वदा
श्री स्तुर्लं कुमारवितमः ॥ ॐ यज्ञ
मानस्य ॐ मे पृथ्वी स्ववर्ण कर्म
नायकन्यावाननं याहृ ही ॥ ॐ ट
दह ॥ ॥ वधूनकन्यादानविधि
॥ ॐ मनस्येक ॥ ॐ कृत्यादि ॥
यजमानस्य पृथ्वीं सालंकार कं
न्यादानं तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ स्व
स्ति ॥ सिलायथका दिवलरव धात्र
भावानद्दश्वा महायक बी ॥ ॐ ::
मृनमङ्गमङ्गं वधू लोवदा तुसी
मृनस्वमसी याद्युद्दीव व धिसर्यं
मङ्गीं प्रभिगृह्णी तनू ज्ञायस्वामु ::
श्रीवधूलोदवा तुसास्मृनस्वमसी
यद्यालोदात व धिवमा मङ्गं
प्राभिगृह्णी तवधू हस्यकयस्वामङ्गं
वधूलो ददा तुसास्मृनस्वमसी ग

ऌन्वा तें व श्रिम यामह्नी ष्विलिनृ
ह्रीं यस्मान्स्वामह्नीं य नृ । नोदवा
तु मानृ नत्वम नी य कु श्री दा ते न
भ्रि व श्री महर्नी ष्विनिनृ ह्रीं तें ॥ ॐ कें
काम ॥ ॐ नृ य ट ट न्य दवा निका
नै व ते दृवा निदम्य ष्या मृ वास ठि
नि नत्वा य निकावा ह्रस्मा नृ वा
ह्रीं मा वा ह्रीं मा या वा ह्री मा वा:
ना कामः प्र निनृ ह्रीं का का में तव
१० निनदेवका या नृ ढि नि स नि
न दा व व ह्रं नु दें वका यं नृ ढि
नि । ठि वें श्रें आ दें वका ० स नि
१ ध मा वी ष्यमा ना नृ ः ध्र ल जा
मी रु व नी दं वें ज स्मि न्यामन्न वश्री
ट ध्मि मन्त्री ष्यमान नु व स्व ल्:
या हें व नि न्दि । स्वाहा वें ह्रें या हि
व नि य व वीं ह्रा न प्र नि नृ ह्रा
नि न प्र या स मि । ध्रे द नृ यादें

श्रममां इ ह्रीं नि आमश्री अ में दया
नि नस्मा द भि यं ना नि द्धि । मानृ ॥
ॐ धु वा नि हु वांनृ ॥ ॐ नृ यें
व म नि य ष्मा व य नि ध्रु वा नि
ध्रु वां य अ व क्ष्मा नाप्र स्मि न्वा य
न नै पु ज या य नु हि ह्रं या ढि:
नि य नु हि गि हि वैं ज्ञा कामं का:
मयनं सा स्मी कामः समृ ह्रा नं ॥
॥ ॥ सूर्य नु कु नाराय क न्या:
दान ता नि का यं ह्रि ग ष्यमप्ति:
ह्रैं वल दं ह्रि नी तु य म दं संत
ददं ॥ ॥ ता कु न ल कमात
या नं कृ नी ह्रीं दं नि य ॥ य न कं
ष्याया ला ह्रा न स श्री कल न स्यां
कौ । न लन य स्यु नं ॥ आ द्वा नि
पूर्ण ॥ ॐ क ष्मा ॐ व ह्रु तु में
वाद्ध प्र ष्यं नाम नि या ह्र मी
मि । य त मा मः कृ य नं य त ज:

꣸ श्री घृतस्य धना पूर्णिमस्थिवके
॥ कन्या ॐ वानस्पतेः ॥ दक्षी
नवान्नन पुष्प दकवीकल्कुलाजा ॥
लाजानमः ऐश्वियाय ॐ नं ॥ ॥
॥ ॥ वाकुली आखवनसमयाय
मिनकादूयके ॥ सूत्रिस ॥ ॥
मनोलाजा दूनि ॥ नाकनलाभव
स्थैर्यसमिध घृतेन ॥ ॐ भूर्भुवः
नै ध्ववकन्या । प्रिमजस्कुवा । गन्ध
श्रीमाध्वं वः पुष्पकामू सुग्रूपन्नायन
ये स्वाहा ॥ ॐ इदमग्नये घृतेन ॥
धलादूया ॥ ॐ ॐ त्वनाघ्रिक
नलाजानाथयनिकके । अग्नि स्वा
नत्तुनयमिवं भक्तान्नानघ्नेमम
स्वाहा ॥ ॐ इदमग्नये घृतेन ॥ ॐ
ॐ ॐ मी लाजानवणास्य । ग्नेस
मिभीकनणैक्ष्व । ममतुश्चातम्

यवनं । नदग्निनमस्यमामिय
ए स्वाहा ॥ ॐ इदमग्नये घृतेन ॥
॥ ॥ लाजालाजा यज्ञाववाय
ध्यको णमवं स्वयक मनस्वात
यानस्वाज ॥ ॥ मालामि आय
के ॥ ॐ भूमादमस्तम श्रीवण ह्रि
श्रावन । प्रानिविश्व घृतन्यभाव:
वाधेस्व पूरणीयवन: ॥ ॥ लाजा
लावर्जावणी णानमपूलिनि
मत्वाय । ॐ नमः गन्धवा ॥ ॥
लाजाला वणीजा नवस्याग्नयके
णमस्युमादायनी सलावनत्वा
य ॥ ॐ तजापसेन ॥ ॥ लाजा
लाव अंदाव नैमृत्यको णमस्का:
माननायके ॥ ॐ भवबायु ॥ ॥
मक्तमिलालानसमयाय मध्वेवया
१५ ॐ लाजाध्वासयायके ॥ पून:

मामलाचस्युंद्वयायःथंसमक्षः
कालउत्रानस्त्राय॥सामघोतेयाय
कः॥अनिनीनस्त्राय॥कालानलाः
यक॥भूतःलाजाक्षेमयाय॥म
नक्षकालउत्रानस्त्राय॥मामयोत
यावक॥ॐभूरवानःथला द्विधुर्ग
व०॥अनिनीनस्त्राय॥उत्सलाकवि
मिनीनस्त्राय॥दासानगायक॥
२॥सत्याज्ञकवलवीय॥ ॥
धवलनलकृयवजायक॥अनुग्निक्रः
तुआयेविनं॥वदूवासनवाकन
यास्थ्यवसमतुलयेतिवय॥स्व
वसालुविनस्वयकृत्यंवेहास्यं
वनक॥ॐनकसिमेविक्रस्त्वान
यस्तु॥ॐद्वंडुंअंविक्रस्त्वानय
तु॥ॐश्रीनिवायस्यांमेविक्रस्त्वा
नयस्तु॥ॐचहाविमायानवाय
विक्रस्त्वानयस्तु॥ॐयङ्गुःयस्तु

स्योविक्रस्त्वानयस्तु॥ॐनमृतु
स्योविक्रस्त्वानयस्तु॥ॐमरवस
कयद्वानवसोमामृतुनानवविः
क्रस्त्वानयस्तु॥१॥चन्दुसकवः
दजायक॥वक्तिमावानन्देवद
नेनजायक॥अंमायुंस्वनंसंकुं
वसतुलसकन्तुं॥ॐकुवसि
कुवेत्वायनआमिकुश्रीत्रिजाश्री
मयिसक्नेवावाजूकयामि॥मेया
तलाउजावनीनमेत्रीवनाव
ःनमं॥मरवलसुंवक्तोधायक॥
कुन्निकुतुआदक्तिणसरवानाम
नयरकं॥वक्तिणाविस्वेक्रोव
नयाय॥ ॥मनोयक्लुसिंक्षो
॥मनोकृनंक्लिता॥मक्षाबाह
त्रिनयकृमिविय॥त्रिनकवाने
धनयाय॥ॐहुःस्वाहा॥ॐव

कृतस्नानं ॥ ॐ भुवः स्वाहा ॥ ॐ स्व
र्दीक्षितः ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ नमः
शम्भवाय ॥ पवित्रं ॥ ॐ नमो हू
ति ॥ उपासनादिविनी त्रिज ॥ वंदा
वनस्कुज ॥ सकलस्कं ॥ सर्वभूत
निवृत्तिस्था ॥ भवनामगुलं ॥ ॥
। ॥ अथ नाभिकरस्य स्तुति ॥ नाः
जा ह्रीं नजनमान ज्ञानमुद्री ॥ हंसः
पादि ॥ नाभिक श्रीकृष्ण ॥ वाह्न
नपूजा ॥ मनवान्यादि ॥ बलिप्रः
दानं ॥ पूजाभिषेकलिकाहोमं ॥
दक्षिणां ॥ दक्षिणादौ १२ ॥
जाक्षिधांडुल्लं ॥ संप्रबधूकदाम
नं ॥ ननःस्पूर्णेन्दु निकास्थो
॥ अकमानस्थापू श्रीसू वर्णकुमा
द्विवाहा हूंनयक्षमि निरक्षथोआ
जकाग्निअक्षरं पूर्णहूनिरसन्दू

द्विमस्तु ॥ अथांगनामनुलस्कोत ॥
मथुलस्कणु ध्यैमिनसिद्धमर्गं ॥
वैवस्तुतिला द्विकलनानीद्वीदं
॥ धनाधिनुवर्धन ॥ वायवुराको
णेग्निस्थुवक्षु मितवर्क्षः ॥ ॐ
अ ॥ एवानाहुत्यादि ॥ ॐ भूआदि
॥ अथालक्षीकेवान्यादि, सर्वं
वडुंपूनास्दूरवं । नथाहवदुनीः
संरक्षां वडुवृक्षाग्नि सन्निरक्षो ॥
अजनानामिमधकं, वडुानसिंदु
नरानु नाशीर्वादं ॥ कन्यानिष्ठ
जीवं ॥ विनायकानुष्ठाय ॥
मनवन्यादि स्वरस्थानन्यथो
॥ कालगंडाय ॥ ॥ श्रीवस्त
पूनाहिक, पक्षुजितिसि ॥ द्यु
जमिद्धौ थकादि ॥ कन्नानि

मिसाधीकादि॥ द्दा॰ आ्याद्धी॥
ख्क॰ त्रिनुकाल॥ शरवनेउ॥
धर्लविय॥ ब्रह्मा श्रीलक्ष्मी कर्मे
नयाम॥ श्रीलक्ष्मी॰ वहिमाया॥
त्रिजकमनर॥ नागयातुथि॥
मक्काय॥ अक्कसक्कणीद्वावस
गनञ॥ ब्रह्मयालमयालाल
शलय॰ धर्लरवहुयाकभूमि
भक्काय॥ ब्रह्मायाक्कसधार्लि
लसथमिमासास्वायु॥ ब्राह्म
ह्निहाकर्व॥ श्री॥ रविवाकल॥
विक्कासतायक॥ ॥ गुरुस॥
वा

मालकागुनधयाणु
गुनायसील॥

२८

१ श्री ब्रह्मय वहिमालालाय
कधकं॥ वहिमाय॰ ब्रह्म
ब्रह्म आम ह्ना दू॰ ब्रह्म आव
वयु ब्रमक्क स॰ भमालकी॰ भू
हूकलम॰ श्रीलक्ष्मी॰ अक्कय
क्कणी॰ नागया॰ अर्धीयकमला
व॰ प्रमाद्धमिदिनी॰ ॐनायकी
न॰ ॐ निनि॰ मायु क्कस॰ भणी॥
मनाव॰ ब्रह्मपूर्येसलाया घति
नाव॰ भूवमकमालकी॰ या१
भूल॰ या१ मू लिमाह्वकीदाल॰
हंमगहा॰ हंमगनाहाया॰ मूं
यथालूं॰ लूंयकि॰ लूंयम॰ ध
वमिभूंमूक्का॰ भूंनुलिमालकी॰
सांलिमालकी॰ या१ मिप्त॰ की

शरवल खिधाकमालका ‚ सिउ
लो आखी दिसलाब ‚ कूर्णयाउ ‚
काउमालकौ ‚ कभिविजिआन॥
सिंदूलमालकौ ‚ काउ ‚ धावाउ ‚
खिकाल ‚ अजमकामालको ‚ खू
जालन ‚ या८ शाहूदू ‚ या८सा
धलि ‚ या१२ सतुन ‚ यू१०८ह्व
दूखिकाल ‚ माधूनि ‚ वाधूनि॥
वाधूनि ‚ क१साधेल ‚ कूहा२
शारवल ‚ कूहा२ वाकू ‚ कूहा
२कहि ‚ कू२ हाल ‚ कूत२स
ह्वी ‚ कू१ भूकन ‚ ह्वं१ भूलाँ ‚
ह्व३ धोकाबीहि ‚ सिंधकाउ ‚
लूँयलो ‚ आहायलौ ‚ पड्डिस
ले ‚ वलीगनहलमालका ‚ ॥
वर्ह्वा ‚ ह्वानवी ‚ मूल ‚ कयनू ‚

मास ‚ कोलम ‚ म्वान ‚ उधूका ‚
धूका ‚ गांधूहाम्ह ‚ सिधूहा॥
म्ह ‚ सली१ आलैमप॥ ऊहूहा
दयानि ‚ यह्वीमधी ‚ ह्वनाय
दल ‚ ह्वं ‚ काउवाधान ‚ म्ब२
कलश ८मा१लाउ ‚ ७ ‚ ८हन ‚
ममश ‚ ह्वकन्द ‚ म्बोल ‚ ब्राल॥
ह्वल ‚ म्वय ‚ यकागउन ‚ नि
अवजोल ‚ ह्वा१०८ हाउलह्व
न ‚ सूकालिमि ‚ ८मा१०८ वय ‚
लश ‚ ओलकासा ‚ ओउाम ‚ लौ
हीमा ‚ लोहावा ‚ गाजऔला॥
ऊदूजा ‚ लूँवाकिला॥ यवाह
लयबिहल ‚ पडुर यलाव॥
धंम बादि कूलू याल॥

विभा ऽधा ‚ कंदा॥

अथ द्वंसमयाच्छद ॥ मास्त ७ ॥
थालाजा, अद्युत्ता, मूलनु ७ ॥
साइदु, बयनसे नठी, शिवदुन्द
का, लाहासा, ला हाया, कमला उ
द, मातया, हमिनेनु, हमिनवा
हाया, शिवदुन्दकारमयाथछ
याल, ति, याकु, मदन होल, मा
लायकोल, का, खुदुच, लाजा अ
कन, थल ॥ ॥ ॥ ॥

समाकुला याहन ॥
श्री सूर्य, ॐ आकृष्णे
गण ॐ गणानांत्वा
कँन, ॐ नमोवनुनाय
धनेश्वर ॐ नमः शम्भ
भुलिसल्ह कगव, ॐ विश्वानना

शिवसमायन ॐ ह्रं दंवि
मानवेनव ॐ अघोरथ्याम
गणेश, ॐ गणानांत्वा
कुमार, ॐ अदवकन्द
मार्कण्डी ॐ हिनछवर्ण
षडीमि ॐ अग्निमीले
रवखानी ॐ शिवानामानि
कमसिद्धि, ॐ कालवदर
तीम ॐ नमः शम्भव
मनिकुमा ॐ ह्रं नमः
मनिकगव ॐ जातवेद
युग ॐ आकृष्णे
आकुम ॐ यमेनदत्त
छ्यासिम ॐ नमः शिव
धर्मतीर्थ ॐ धीवाम
मियोहलू ॐ जातवेदस

साधु,	ॐ ज्ञानयदस
हरसन्त	ॐ नीज्ञान
धामादत	ॐ महस्तुनीभा
माविन्द्र,	ॐ श्रीनियद्धा
गहन्तन,	ॐ नमः नमूया
भूगम,	ॐ पुस्वपूर्वि
कौते	ॐ मूरीरवाना
कृष्णगन	ॐ यज्ञा तमा
मानुयनि	ॐ नमस्कनूद
तुअरसनी	ॐ मुस्वपूं॥
नाग	ॐ नमो स्तुसर्प्या
विलै	ॐ हहृध्या॥
हलिनी,	ॐ अहूताना।
नूतलक्षी	ॐ श्रीधते
दवमळंद	ॐ विश्वानयह

धम्रस्वनिक आदं नायादत

१ मियवन्धः॥ ॥ ॐकनः श्रीयमिर्द्धमा. रमोश्रील श्री रामस्वामी। ... क्र. वन
स्त्रीमा. सूनजानस्नु मिश्र ... स्त्राः॥ लोकबालागुणाः नागाः सामस्त ... ॥
हृदयादिमनावृद्धि. तुअसामिकसुर्दम॥ नावाणमानरेन्द्रासा. जरान्तुनवनन्धरी
विद्याधनायकनक्षाः सागराः कल्पयादयाः॥ नीकाकानायादापूर्वं मियर्गमं
पूजा कृता। कावसी मिणनर्दुर्क. आवद्धनुदिवाकरो॥ ॥ नामन्हद्दीबद्धामिति॥
॥ ॥ श्री १४दहिरादेवनो बो ७ ४ क्षीवामरा. बो २ जोसि. बो ७ ४ आचार्य॥
कुहाल. नाउ नेमसेनबो १ महकंबो १४ आमिया थर्थं॥ हहिरा. नाउ कु
लाल यातसुमाल॥ मियावोइंथा॥ ७ ॥ ७ ॥

१ ॐ नमो वृद्धरूपेण ॥ ॥ वृद्धि
श्राद्धविधिर्लिख्यते ॥ ॥ ॐ अ
स्मत्सर्वयथा दूर्वा दधीनिव
द्वीफलं । क्रियापूर्वं तु कर्म
ण्येव वृद्धिश्राद्धं तु कीर्तितं ॥ ॥
मातॄणामग्रतः श्राद्धं पितॄणां
कृतवत्कृतं । नमो मातामहानां
तु वृद्धिश्राद्धं विधीयते ॥ अ
द्य ॥ मातृमुख्यविवाहरूप
पितामहपूर्वकं ॥ ॥ नमोऽ
ज्ञानमनोवमनं ॥ अद्यपूर्वा
द्विष्टजनं ॥ अद्यनाद्यनयूथ्याः
ऊलं गृहीत्वा ॥ ॐ भूर्भवादि ॥ य
जमानस्यामुकस्या पूर्वं प्रियः
वर्धापकवृद्धिश्राद्धकर्मकर्तुं

श्रीमत्स्वाम्याधीनमः ॥ ॐ कुरु
ष्व ॥ पुण्याहं २ ॥ ॥ अनसाद्याधा
आवाहके ॥ ॐ विश्वेश्वराद्दवस्याः
भूरन्नभीश्मानन्दवदस्य ईदमाः
मन २ ॥ पुण्यं वृद्धि ॥ नमोऽ
नमाद्रार्थी वृद्धि ॥ ॥ मातृप
॥ ॐ मातृपितामही प्रपितामही
स्यः पितृपितामहप्रपितामह
स्यः मातामहप्रमातामहवृद्ध
प्रमातामहेभ्यः स्वधीय. नार्
जनाय. सदा शिवाय गणे
श. कुलपालाय. मातृनसार्द्धः
नवद्देवतेभ्यः ईदमासनं वृद्धि
पुण्यं २ ॥ नवाहादेनलाद्याधेवृ
द्धि ॥ नव्दिके स्वधावाच्याय इदं
दमासनाद्रियाद्याद्यादि ॥ ॥
यजमानेन स्वपाद प्रक्षाल्य ॥

मा॰ श्रोडहृमिनंख्तु७ ॥ वदूवास
नग्रोय ॥ ना॰ उहाल ॥ मालकोवा
य ॥ ब्राह्मणवस्थेत ॥ यउमानप
क्षिनसाय ॥ मिश्चुवरवांस्वय ॥
नमोयउमानेनायस्था ॥ पूजाव
त्रिनोवायक ॥ धनयशोवका ॥
य ॥ धनिवक्षल नंस्ठा सवालख
सलाव सम ॥ ॥ दूर्वा ॥ ॐ वनू
नदेवकाय २ ॥ ॐ वनूनस्योहं ॥
यव ॥ ॐ विष्णुदेवकाय २ ॥ ॐ
दमिष्णु ॥ दूर्वा ॥ ॐ प्रजायमिदं
वकाय २ ॥ ॐ काण्डात्काण्डात् ॥
दधि ॥ ॐ उमायमिदंवकाय २ ॥
ॐ नमः शम्भवा ॥ वनीकल ॥ ॐ
वृहस्पमिदंवकाय २ ॥ ॐ वृहद:
स्पते ॥ १ ॥ धन ॥ अयोदकवा
ले ॥ ॐ सम्बयामि ॥ भूनादर्

॥ मा॰ जोसीकेउडि ॥ श्रान १० ॥ ॥
मा॰ ॥ ॐ त्रिरुद्धस्यादेवस्यकृप्न
वेश्चवनवदेवस्य ६० ट्वामसर्व बु
ड्डि ॥ पूर्वार २ ॥ ॐ मातृ मिमामही
उमिवामहीमासामउमावाम
हवृद्धउमाना मदहयं सूर्याय
नोवायनमाअल्पादि ॥ ॐ दम
सनाढि ॥ पूजाउरि २ ॥ ॐ नन्दिके
श्वनायउमाबार्यादि ॥ ॥ य
उमाननपाकु रवाहत्वान्यासं
कानयंउ ७ ॥ ॐ गयाधनायहृद
यंदिमडेंग ॥ ॥ मा॰ हायासये
नन्नै ॥ ॐ भूहोम २ ॥ ॐ वनूना
य २ ॥ ॐ भूयावेनय २ ॥ सर्मी
नमाहायासवाले ॥ ॐ हंसमो
॥ ॐ गंगोवयसूनै ॥ मा॰ हायास
भूतरवूनीनधिसायावसीरवा

नदूथनं ॥ ॐ वज्रलेर ॥ ॐ वि
कृवेर ॥ ॐ कृत्वायर ॥ [illegible]
[illegible] मूलिसनं ॥ ॐ वज्रण
मूर्धयपाक्कि [illegible] कर ॥ ॐ नक्कि [illegible]
[illegible] ॥ ॐ वज्रणमूर्धयवचना:
[illegible] पूर्णर ॥ ॐ वज्रणमूर्धय
पूयार ॥ [illegible] सामैसिद्धि
[illegible] ॥ ॐ [illegible] सिवनंर ॥ ॐ
[illegible] पूर्णर ॥ ॐ [illegible]
वदेर ॥ ॐ [illegible] सनायर ॥
ॐ [illegible] मूर्धयर ॥ [illegible] ॥
ॐ उ [illegible] सादयय: ॥ ॐ ट
कि [illegible] नवदेवनैयय: ॥
॥ ॥ [illegible] पूजा [illegible] सिद्धि
नै ॥ ॐ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ॐ
गयाशैर ॥ ॐ गयाधनायर ॥
ॐ पूर्ण [illegible] कायर ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॐ:
[illegible] ॥ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॐ [illegible]
॥ ॐ मा [illegible] ३ [illegible] ३ मामामह
३ [illegible] मायाय [illegible] स:
[illegible] गणेशाय [illegible]:
यालाय [illegible] माह
नवदेव [illegible]: [illegible] मानस्याम
[illegible]
[illegible] कर्तुस:
[illegible] ॥ माह ३ [illegible] ३ माना
मह ३ [illegible] माह
नवदेवमाना [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] पूर्व [illegible]
[illegible] सिद्धि ॥ ॐ कर
[illegible] ॥ ॥ [illegible]
नं ॥ ॐ [illegible] र ॥ ॐ [illegible] कायर ॥
॥ ॥ [illegible] ॥ ॐ [illegible]

मासवीमन्म मान्त्रिणी। द्विजर्षज
या। देव सैन्याख्य भस्वाहा. मा
नश्रालोक मानवः। हृद्दिःयुः
द्विस्कथाउ द्दि नाम्भदेववन्त्रया
मह॥ नन्द नान्दिनी वासी देव
सुदेवत्य गर्भ वः। जयावर्वि
जयावेव. सर्फे ना द्वानमाधि
या॥ मातृपितामहीप्रपिता:
महीन्याद्रि॥ पूर्णेन्द्र॥ नान्दि
कश्राद्धार्थ्यासमुपर्वदेवृद्धि॥
नगाविश्वेदेवमुमावाहयुष्मा ॐ
विश्वानदेवानुवैश्वानर देवा:
नूनमानस्नामूकका व्यायुः
दधिक यवादक वृद्धि आद्दे
ॐ इमावाहयिष्ये॥ ॐ आमास

धर्षणाधृमाविश्वेदेवासहस्रा
गत। दाध्वेष मादायुष्मः सर्व॥
ॐ आवाहय॥ ॥ नमामातृ
देशआवाहन॥ ॐ मातृपिताम
हीप्रपितामही पितृपितामह:
प्रपितामहान् ॐ इमावाहयि
ष्ये॥ ॐ नन्दिमुखाः पितृगणा
गतापिमामिन्द्रम। नान्दिमुखाः पृ
थिवीदे॥ ॐ आवाहय॥ ॐ नान्दि
कश्राद्धार्थ्यायं ॐ इमावाहयि
ष्ये॥ ॐ आवाहय॥ ॥ विश्वे
दोवनमः इदम्पाद्यं वृद्धि॥ एव
वैश्वदेवेभ्यः॥ ॐ मातृपिताम
हीप्रपितामही भ्यः पितृपिता
महप्रपितामहेभ्यः मातामह
प्रमातामह वृद्धिप्रमातामहेभ्य:
इदम्पाद्यं वृद्धि॥ नान्दिकश्राद्धे
ष्वायं इदम्पाद्यं वृद्धि॥ एवमर्घं

द्धि ॥ उत्पत्तिं वृद्धि ॥ प्रवंवा छन्न
॥ अन्नत सिंदूरयक्षीगत्री मधु
श्च धूमवती णा कं ॥ [illegible]णः
हि ॥ नमेतु सूर्या ॥ व त्वमी इ ॐ
न[illegible]स्य धीमव ॐ ० ॥ ॐ
वि । प्रभुस्याद्वयस्या प्रथमा वामह्व:
मानमून्न संकल्प सिद्धिरस्तु ।
ॐ माह ३ मिह २ मासास ३ म
ह्वयः अथवा स्यमाल पूर्वन स
कल्प सिद्धिरस्तु ॥ ॐ नान्दी कं:
[illegible] आदि ॥ ॥ म
[illegible] ७ ॥ पूर्वाद्वि
॥ [illegible] ॐ
मधुलता कायकं ॥ [illegible]:
[illegible] ॥ ॐ मधु वाता ऋतायत
मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्न
सन्त्वोषधी मधुनक्तमुतोषसः

मधुमत्पार्थिवं रजः मधु द्यौरस्तु
नः पिता मधुमान्नो वनस्पतिर्मधु
माँ अस्तु सूर्यः माध्वी
र्गावो भवन्तु नः ॥ ॐ [illegible] २ ॥ ॐ
[illegible] ॥ [illegible]स्याद्वयस्या
[illegible]स्या मह ३:
मिह ३ मासास ३ मह्वयाय:
[illegible]मानस्य [illegible]
संकल्प सिद्धिरस्तु ॥ ॐ देवसवि
तः प्रसव यज्ञं प्रसव यज्ञपतिं
भगाय दिव्यो गन्धर्वः केतपूः
केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं
नः स्वदतु ॥ स्वाहा ॥ [illegible]
ल्पसिद्धि ॥ [illegible] ॥ ॐ
[illegible]कल्प सिद्धिरस्तु ॥ २ ॥
॥ ॥ ॐ [illegible] ॥
॥ ॥ ॥ [illegible] ॥ ॐ
[illegible] वृद्धि ॥ पूर्वा २

॥ ॐ बंशाङ्गेन ॥ ॐ नागाय नाग
॥ ॐ मध्य शिवाय ॥ ॐ गंगागु
य ॥ ॐ कृपालाय ॥ ॐ दुर्लभी
॥ ॐ नागाय ॥ ॐ निरञ्जननाथाय:
नाय ॥ ॐ भवनैकेश्वराय ॥ ॐ प्र
लिमल्लकेश्वराय ॥ ॐ अमृताव:
मात्तलीकेश्वराय ॥ ॐ कपिलाद्रि
मध्यगोमालकारय: ॥ ॐ हवक
वान्ती ॥ ॐ हव सिद्धिं दिनकृते ॥ ॐ
नवेश्वराय ॥ ॐ कृत्तिकेश्वर्यै ॥
ॐ हवसर ॥ ॐ मानेश्वर्यै ॥ ॐ
वागाहीदेव्यै ॥ ॐ हीसनारायेश्वर
या ॥ ॐ नृत्येश्वराय ॥ ॐ मरुदुव
नाय ॥ ॐ शुभश्वेश्वर्यै ॥ ॐ पद्मभ
नाय ॥ ॐ वीरभद्राय ॥ ॐ गुहल
क्ष्मी ॥ ॐ कौमार्यै ॥ ॐ बंशाङ्गेन ॥
वन्दनाविभूतवाक्ष्मीणवीनयूक्ष
भूयदीयाक ॥ ॐ द्रकलयूक्षा:

मामूलस्वाहि ॥ ॥ जीवमूर्त्तिन
महलकाजौ ॥ क्षौ ॥ ॐ नम
:श्रीमूर्त्तये ॥ ॐ यवाकृस्मगी ॥
ॐ यस्याहकं ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ विघ्नेश्वराय ॥ ॐ नित्यानन्द ॥
ॐ जयश्रीसिंग ॥ ॐ शुद्धस्फटिक
संकाशं वन्दे गङ्गाशिरो । च
लसफणिकुण्डलं नागराजेन्द्र
माल्यकं ॥ ॐ शीत्कारालङ्कारं ॥
ॐ लक्ष्मीणां ॐ जगदेकार्कं:
विंशी कैवल्याद्धि कर्णाभिन्नं ।
विश्वमूर्त्तिं भास्वत्कृताङ्गं न
मामि नित्यं भवाङ्कुरध्वंसी ॥ ॐ
गणेशभवानी ॥ ॥ ... ॥
ॐ वन्दिका शिवशक्तिस्तुति ॥ ॐ शिव
शक्तिभ्यां ॥ ॐ बालघ्रहाकुमारी
कृतमदकालिकायाजायमालाज्य
क्षौ सर्वज्ञ ओं द्विजन्मा शिवलिंगाः

विकटनाचायू न वाविमाला ।
म कुम्भाया कृष्ट ह्मागलिनकय
शमान धूमालावकली, मादवी
दक्षदवी गिपुवनजननीयातु
मां मूहशक्तिः ॥ ॐ अस्याऋयात
गम्यऋस मितिछंदः श्यालको
दलिः ॥ मंत्रलीकालयेडाक्ताः
नमस्कृत्य पिनाकिनं ॥ ॐ ऐकां
नारान ॥ ॐ नमस्कृत्य भूताय
मेनवाय महात्मने । वृषभ
जालीमाय, ह्लानकनमी भूत
॥ ॐ उत्फुल्लाम्बुज ॥ ॐ मृडानी
ण ॥ ॐ कृत्तनाकालिकानि, दी
यज्ञानन्द कांमक्षी । सा [illegible]
मायजिहीमं, वन्दे देवनाम
ॐ ॥ ॐ वज्रमानवी ॥ ॐ ओम
मतिमदानन्द, निर्म्मलज्ञान

भूमिदेवी नमः शिवाय नमः
ग, श्रीकरकाली । गमूलाआ ॥ ॐ
उग्रकालीमंगला ॥ ॐ वज्र [illegible]
महामाया ॥ ॐ भूमंत्र ॥ ॐ या
सा ॥ ॐ मधुमत्त [illegible] ॥ ॐ
हं ह्रदय ॥ ॥ [illegible]
॥ ॐ श्रीनीणधामक्षी मम्वादिन
दव ॥ ॐ यथावाण ॥ ॐ यर्ज
मानस्यानि ॥ [illegible] ॥ ॥
[illegible] ॥ ॐ मधुधा
ला ॥ ॐ [illegible] ॥ ॐ [illegible] ॥ ॐ
[illegible]

॥ ॥ॐ सूर्याय कल्पमस्तु ॥ॐ श्री
सोमाय नमस्तु ॥ॐ शिवाय भौमाय शु
भं कुरु ॥ॐ श्री गोयुनंदा शिरोमणि
॥ श्री बाहुबलि स्वामी मंडलु थे ॥
ॐ शिवाय भगवान् अस्तु ॥ ॥ विघ्न
हरणाय स्वामिने ॥ॐ पूर्णायु
वमनं स्वाहि ॥ॐ कलविय ॥ॐ
कमंडल अस्तु ॥ ॥ विघ्नहर ॥ ॥
अवाय वाति वि श्रेष्ठ नमः ॥ एकं
म ॥ॐ विघ्नस्वामी वर्ग नमस्
यै अनन्तदेवस्य ः मार २ विहर
मानाम ३ मरुस्य ः भोगनभा
हनवदेववाय्य ः वलमन्त्रमु
दकमदन्यमस्तु ॥ॐ आयामृ
हि हिमालयामन्त्रमृदकमकथ्य
मस्तु ॥ कुंथानाम ाट २ विरट २
मानाम २ मक्ष नस्तु ॥ ॥
वं स्वामी बोवन्नं ॥ॐ लोक मनी

नर्दनामि स्वाहि ॥ ॥ आमोथ
वर्णमोक्ष सखा हं वनस्य गुलसर्वं
सहायकं ॥ॐ दांमानानी विकट
ना शिरमाहि ॥ मस्तुलम आकलय
सर्वमासस सहाय ॥ॐ श्री किहं
व ॥ धर्मकाय ॥ॐ पुष्टि सीन ॥ ॥
विघ्नहरक काधे विद्या भोलर
भूर्धिनकायावयवोदयलरव
व. श्रोगसन सहायकं ॥ॐ स्वाः
हावाय विश्वनाथ नावृद्धि ॥ॐ
अस्याह वनलमनि भोलकाल
कं ॥ॐ प्रीयका कैस्य ः स्वाहावृ
द्धि ॥ कुशलवहायकं ॥ॐ भू
भुर्व भवृद्धि ॥ॐ नवदेवताय
ः स्वाहा वायु नावृद्धि ॥ धनद
ववन्कि भोगदायकं ॥ ॥ ॥
नवोगमानन्दं ॥ॐ एमहिक ॥ॐ
ॐ दं विघ्न ॥ॐ नमः स्वाहा ॥

ॐ णमो नांत्ता ॥ ॐ नमो वत्तुभोय
॥ ॐ जावठयस ॥ ॐ नमो [illegible]
॥ ॐ सक्कू णी ओ ॥ ॐ सिवो मोत्ति
॥ ॐ मोलियवा ॥ ॐ उद्दृ य ॥ ॐ
॥ ॥ [illegible] आस ॥ ॐ अमृयरमो ॥
ॐ भुद्दिविओ ॥ ॐ मानसीक ॥
ॐ ॐ भेद्दो ॥ ॐ समरत्थोवहुआ ॥
॥ ६ ॥ ॥ ॐ सिखानामासि ॥ ॐ
समरत्थ ॥ ॐ जावठदसो ॥ ॐ
नमस्कृद ॥ ॐ भृष्टभुरिक ॥
ॐ मीछान ॥ ॐ हिंसकवसु ॥
ॐ मदोकूरुं ॥ ॐ नमः सगव
॥ ॐ नमो सुनील ॥ ॐ यावनुड ॥
ॐ मीवेभू विक ॥ ॐ भृत्ति सुभि
ॐ सळवणीर्भा ॥ ॐ णीहीसं ॥ ॐ
सतवाणं ॥ ॐ विध्वनहू दो ॥ ॥
ॐ आस्माचे वीतकनिद्धं माहि:
६ मी: पुचिचा सवेच ॥ [illegible] ६ हि

त्वास्वधिमिस्तकिजावनःउलिर्व
असकत्ते सोलभय ॥ भूतस्वर्दि
ववनस्यसेभवर्ण्णा ॥ श्रिथीक:
सहस्रवल ॥ हिवडनभूदन ॥
॥ ॥ ॐ [illegible] ॥ ५ ॥ ॐ
भूवसि ॥ ॐ गउसि ॥ [illegible] ॥
ॐ आः कालिवी ॥ [illegible] ॥ ॐ भून
यव ॥ [illegible] ॥ ॐ नमः गरसु अय
॥ [illegible] ॥ ॐ मनोहरिं: ॥ ॐ नि
यु ॥ वायलोलू ॥ [illegible] ॥ [illegible]
वक्किणीवान ॥ ॥ [illegible]
अ ॥ वायनकायालोमवयवाद
वयालोमवनपूहिमकविय ॥
ॐ ध्वसात्ता ॥ ॐ भूद्विनाई ॥
यव ॥ ॐ यवउक ॥ [illegible] ॥ ॐ
वयविहृहा ॥ सत्तुणी ॥ ॐ दमि
काथा ॥ [illegible] णीहोद ॥ सकलन्नं
मिय ॥ ॐ वेजणस्यते ॥ ॥

सकलविघ्नोपशमनं ॥ ॐ हूं यां द्विसं
गः सर्वविघ्नाः स्वस्थानवासा
ः स्वस्तु ॥ ॐ कपिलादिष्वयं स्फुरं
मान्दकाभ्रूलिंगम्यतां ॥ ॐ क्षीं
मागीदं श्री स्वस्थानवासास्तवस्तु
॥ ॥ श्रीउपसर्गविसर्जनं ॥
ॐ देवागानुविंशगामे विश्वा
गानुमिता । मनरस्थानं स्वस्थं
वयस्मं स्वाहावानं धूः ॥ ॥
विघ्नध्वंसादिविसर्जनं ॥ ॐ वि
घ्नध्वांदववस्यायुष्मं श्रीमान
देवस्य स्व सन्निधिर्भवमस्तु ॥ श्री
उपसर्गस्य वस्तुनिग्रहकारका
यजमानन ॥ दुस्वाध्यस्वाहि
कायः ॥ श्री मार्गीपूजास्थाय ॥
स्वस्वसाधि ॥ मासलीपूजाक्षी
य ॥ ॥ ॥ ॐ स्वामपूर्वकार्य
अवादकपूर्ति आदि विधिः ॥









क्ष ॥ ॐ श्रीकृष्ण ॥ ॥ गुरुपूजा ॥ ॐ कावनदगणकनार्घ
पूजा ॥ चन्दनादि हृमन ॥ ॥

२ यन पडूर

व

ॐ दुंप स्वस्ति जङ स्वस्ति मटओं

ओं मानी स्वगुं जल २मना बलिःम

जय

१श्रीब्राह्मण. यजमान

२म ल ल न्माय ॥ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॥सा मात्री सङ्कीकृत

वन्दना ॥ दिस्वानं ॥ ॥ॐ स्वस्ति न इन्द्रा ॥ॐ स्वदमक

॥ॐ त्वंय विस्मिन्दा ॥ॐ यज्ञोपवीतं ॥ॐ याःफलिनीया ॥

॥ग न दूर्वाक्षतं ॥ ॥आवाहनं ॥ सूर्याद्यं ॥वा